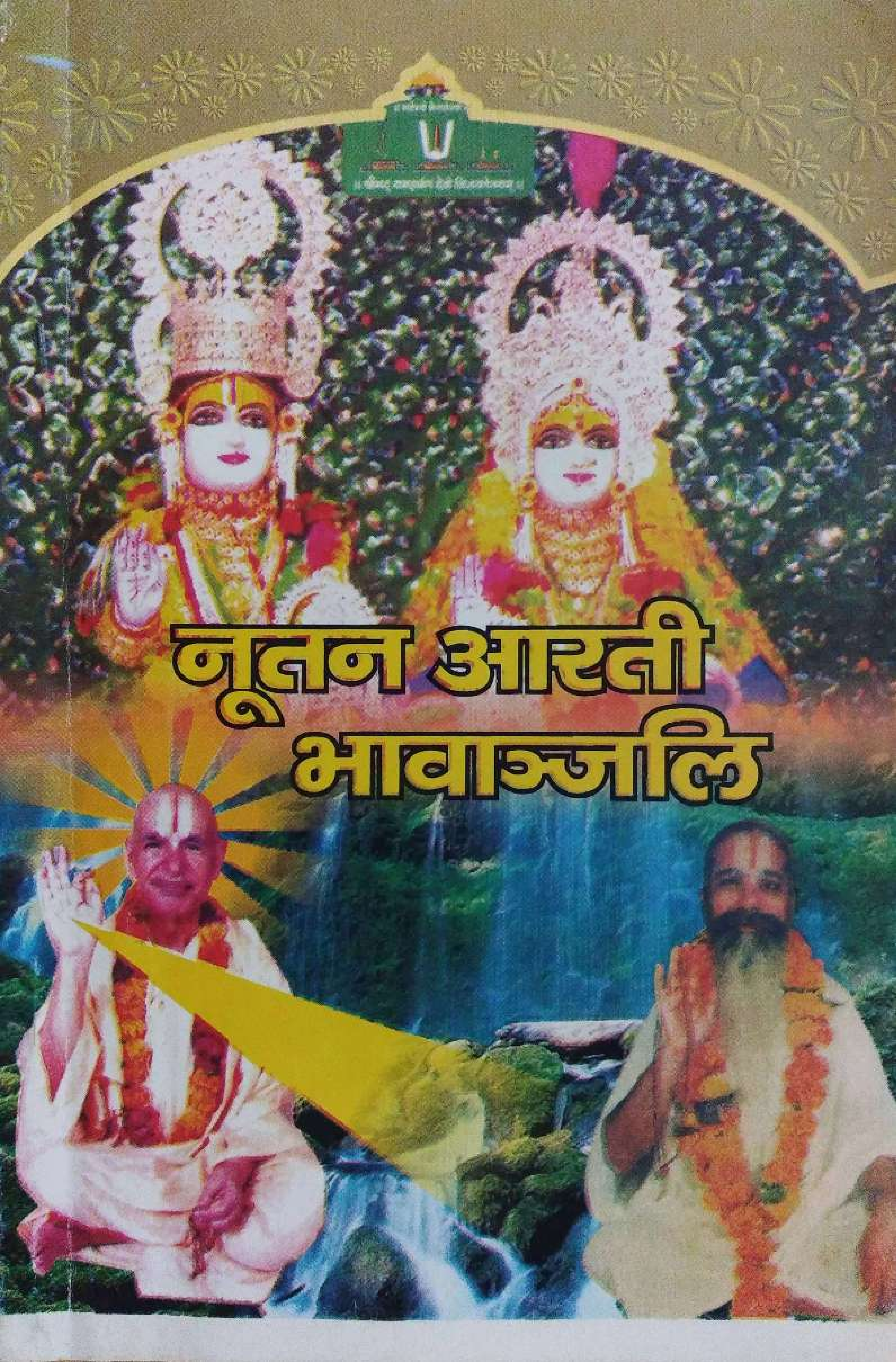

नूतन आरती
भावाञ्जलि

पुस्तक प्राप्ति स्थान

श्री रामहर्षण सेवा संस्थान
परिक्रमा मार्ग नया घाट
अयोध्या(उ.प्र.) - मो. 7800126630

।। श्री सीतारामाभ्यां नमः।।

आरती भावाञ्जलि

प्रकाशन विभाग

श्री रामहर्षण कुंज, नयाघाट

परिक्रमा मार्ग, श्री अयोध्याजी (उ.प्र.)

आरती भावाञ्जलि

प्रकाशक : श्री हरिदास जी महाराज
महान्त श्री रामहर्षण कुंज, अयोध्या

न्योछावर रु0 15.00

तृतीय संस्करण : श्री रामनवमी महोत्सव
2012 1 अप्रैल 2012

मुद्रक : मिश्रा प्रिंटिंग प्रेस
अयोध्याजी

अनुक्रमणिका

अनन्त श्री विभूषित प्रेममूर्ति

पंचरसाचार्य श्री स्वामिपाद श्री मद्

रामहर्षण दास जी महाराज के अमृतोपदेश

1- स्वाध्याय में निरत रहिये । स्वाध्याय का अर्थ अपना अध्ययन है। हम में कौन-कौन से दोष है व कमजोरियाँ हैं उनको निकालने की कोशिश करना चाहिये। संसार के दोष और हेयता व नश्वरता रोज-रोज देखते रहना चाहिये। दूसरे अर्थ में स्वाध्याय का अर्थ है मंत्र जाप और सद्ग्रन्थों का अध्ययन। मंत्र के अनुष्ठान से मन्त्र के देवता अवश्य ही दर्शन देते हैं, ऐसा पातंजलि योग दर्शन में लिखा है।

2- भागवत धर्म की अपनी रहनी, कहनी और करनी होनी चाहिये।

3- उक्त जीवन निर्माण करने का प्रयत्न करते हुये प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिये कि दास में दास धर्म आ जाये।

4- जीव की जीवनी शक्ति श्री सीताजी (किशोरी जू) हैं। अस्तु, उनके आश्रय में रहने से जीव को आत्मा, सहज स्वरुप सरलता के साथ सुलभ हो जाता है।

5- आचार्य के प्रति प्रीति ज्यों-ज्यों बढ़ती जायेगी त्यों-त्यों गुणों का विकास व प्रभु की निकटता प्राप्त होती जायेगी। आचाार्यनुवर्तन करना ही ज्ञानपन है।

6- अपना कोई नहीं, अपने केवल राम जी हैं। अतः सर्व भूतों में सम दृष्टि रखना प्रभु पूजा है।

7- अर्कमण्य बनने से भगवदर्थ कर्म करना श्रेष्ठ है। कैंकर्य रुप में जीवनोपयोगी व आध्यात्मापयोगी कार्य करते रहना चाहिये।

8- भागवतों का संग भव को नष्ट करता है। अतः संत-संग सेवनीय है।

9- प्रेम की डोरी से बँधकर प्रभु छुड़ाने की शक्ति नहीं रखते।

10- आचार्यानुरक्ति ही प्रभु का मुखोल्लास करती है।

11- प्रभु के नाम, रुप, लीला व धाम से संलग्न रहना ही रामजी से मिले रहना है।

12- आचार्याभिमान की अवस्था अन्तःकरण में प्रवेश करते ही प्राप्यं की प्राप्ति हो जाती है।

13- दीर्घ काल तक निरन्तर सादर अभ्यास करने से दृढ भूमिका अर्थात स्थिति प्राप्त होती है।

14- हम श्री रामजी किशोरी जी के हो गये हैं। संसार से हमारा सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। हमें यह गौरव रखना चाहिए।

15- हम सब आचार्य चरणों में समर्पित कर चुके हैं। अत: मन, बुद्धि से गुरुदेव का अनुवर्तन करने से ही आत्म-सुख मिलता है।

16- भजन करने से सब विपदायें मिट जाती हैं।

17- जीवन को भजनमय बनाकर भगवान का सान्निध्य प्राप्त कर लेना ही देह धारण का चरम फल है।

18- जीवन में साधु स्वभाव का उतरना ही सर्व श्रेष्ठ ज्ञान का आ जाना है।

19- अपने प्रपन्न जनो का योग क्षेम स्वयं प्रभु देखते हैं। जिमि बालक राखहिं महतारी । अत: जीविका का सम्पादन कार्य भी प्रभु सेवा की चेष्टा से हो तो वह भी भजन का ही अंग है।

20- सत्य के साँचे में ढाल कर किया हुआ व्यवहार सत्य स्वरुप परमात्मा के पास पहुँचता है।

21- जो स्वयं अपनी रक्षा के लिए एवं सुखादि के लिए प्रयत्नशील हैं। वे रक्षक प्रभु के बढ़ते हुये हाथ को हटा रहे हैं। हाँ कैंकर्य भाव से जो भी करणीय कर्म आयें उन्हे बिना अहं, आशक्ति और फलाशा के करता रहे।

22- संत सेवा एवं संतानुराग ही प्रभु सेवा व प्रभु प्रेम है।

23- श्री सीताराम जी सा कोई परम तत्व नहीं है। अत: उनका कैंकर्य प्राप्त कर लेना ही परम पुरुषार्थ है।

24- आत्मानुरुप साधन साध्य को सामने लाते हैं।

भूमिका

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक पूर्णतम परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान सगुण-साकार, निर्गुण-निराकार, सविशेष-निर्विशेष, अज, अद्वैत, अनाम, षट् ऐश्वर्य सम्पन्न, अचिन्त्य शक्ति से युक्त सर्व समर्थ हैं, किन्तु प्रेमी भक्त उनकी अनन्त कायं सम्पत्ति (अनन्त सौन्दर्य, सौकुमार्य, सौष्ठव, लालित्यादि) का दर्शन कर ऐश्वर्य को भूल 'मधुर भाव' में पग जाता है।

श्री प्रेम रामायण महाकाव्य में कौशिल्या जी कहती हैं-

सुठि सुकुमार लाल गभुआरे। बहु निशिचरी निशाचर मारे।
सकल अमानुष लागति बाता। भई कृपा कौशिक मुनि त्राता।।
माधुर भाव नेह भरि माई। भूली रघुपति पर प्रभुताई।।

माधुर्य भाव में डूबकर भक्त अपने प्रभु की आरती उतारता है, रक्षा मन्त्र पढ़कर मंगलानुशासन करता है। आरती शब्द का अर्थ है - कष्ट, दु:ख, अर्थात् आरती उतारकर अपने भगवान के कष्ट को दूर करता है, क्योंकि वह भगवान के सुख से ही सुखी रहने के स्वभाव वाला होता है।

आरती की प्रदीप्त-बत्तियों पर हाथ घुमाकर सिर में रखने का अर्थ है, भगवान के कष्ट को अपने ऊपर धारण करना।

इस प्रकार जो भगवान की आरती को अपने सिर पर धारण करता है, वह स्वयं सब प्रकार की आर्तियों से मुक्त हो जाता है।

" आरति हरण आरती नीकी"

भगवान की आरती 14 बार उतारनी चाहिये। चार बार चरण कमल की, दो बार कटि प्रदेश की, एक बार मुख मण्डल की एवं सात बार सर्वांगों की आरती करनी चाहिये।

आदौ चतुष्पादतले च विष्णोर्द्वौनाभि देशे मुखमण्डलैक।
सर्वेषु चाङ्गेष्वपि सप्तवारानारार्त्रिक भक्तजनस्तु कुर्यात्।।

अनेक ग्रन्थों में आरती की बहुत महिमा गयी गई है–

(1) **स्कन्द पुराणे ब्रह्म–नारद सम्वादे–**
बहुवर्ति समायुक्तं, ज्वलन्तं केशवोपरि।
कुर्यादारार्त्रिकं यस्तु, कल्प कोटि वसोद्दिवि ।।

(2) **कर्पूरेण तु यः कुर्याद्भक्त्या केशव मूर्धनि।**
आरार्त्रिकं मुनि श्रेष्ठ, प्रविशेद्विष्णुमव्ययम् ।।

(3) **श्री पुलस्त्येन विष्णु धर्मे**
धूपं चारार्त्रिकं पश्येत्, कराभ्याञ्च प्रवन्दते।
कुल कोटिः समुधृत्य, याति विष्णोः परम पदम्।।

– महान्त हरिदास
श्री रामहर्षण कुञ्ज

" ॐ गुं गुरवे नमः "

श्री गुरुः शरणं मम ! श्री गुरुः शरणं मम !

अखण्ड मण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।1।।
अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।2।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।3।।
बन्दउँ गुरु पद कंज, कृपा सिन्धु नर रुप हरि।
महामोह तम पुंज,जासु वचन रविकर निकर।।4।।

जगद्गुरु स्वामी श्री रामान्दाचार्य जी की आरती

श्री रामान्दाचार्य जी की शुभ आरती करिये।
भाव सहित गुरुदेव के दोउ चरणन परिये।।1।।
प्रगटे श्री रघुवीर पतित पावन अवतारी।
श्री प्रयाग के भाग्य त्रिवेणी तट सुखकारी।।2।।
पुण्य सदन है पिता सुशीला मातु धन्य हैं।
गुरुं राघवानन्द आप सम कौन अन्य है।।3।।
पंच गंग को घाट धन्य सुरसरि श्री काशी।
द्वादश शिष्य प्रधान धन्य सियराम उपासी।।4।।
धन्य अनन्तानन्द कबीर रैदास सुजाना।
पीपा धना महान, धन्य गुरु भक्त प्रधाना।।5।।
''प्रेमनिधी'' परि पाँय, आरती नित्य उतारे
जय श्री रामानन्द, जगद्गुरु जयति उचारे।।6।।

जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी महाराज का मङ्गलाष्टक

सुशीला पुत्र रत्नाय पुण्यसद्नात्मजायच।

सुमङ्गलं द्विजेन्द्राय रामानन्दाय मङ्गलम् ।।1।।

मङ्गलं यतीन्द्राय सर्वपूज्याय मङ्गलम् ।

सर्वलोकशरण्याय रामानन्दाय मङ्गलम्।।2।।

वेद वेदान्त निष्ठाय मङ्गलं ब्रह्मचारिणे।

साक्षाद्राम् स्वरुपाय रामानन्दाय मङ्गलम् ।।3।।

देव देवेन्द्र पूज्याय कारुण्यामृत सिन्धवे।

दिव्य गुणगुणोद्याय रामानन्दाय मङ्गलम् ।।4।।

विद्वन्मौलि सुरत्नाय यतिवर्याय मङ्गलम्।

महतां महनीयाय रामानन्दाय मङ्गलम् ।।5।।

श्री सम्प्रदायाचार्याय पुण्यश्लोकाय मङ्गलम्।

राघवानन्द शिष्याय रामानन्दाय मङ्गलम् ।।6।।

आनन्दभाष्यकाराय परमानन्द प्रदाय च।

सच्चिदानन्दरुपाय रामानन्दाय मङ्गलम् ।।7।।

तीर्थराजेऽवतीर्णाय पञ्चगंगा निवासिने।

दया–वात्सल्य पूर्णाय रामानन्दाय मङ्गलम् ।।8।।

मङ्गलाष्टकमिदं दिव्यं पठेदाचार्य सन्निधौ।

तस्य तुष्टौ भवेद्रामः रामानन्द प्रसादतः ।।9।।

षोडशी स्तोत्रः

सुशीला तनयं वन्दे श्री पुण्य सदनात्मजम् ।

राघवानन्द सच्छिष्यं रामानन्दं यतीश्वरम् ।।1।।

तीर्थ राजे प्रयागे तु ह्यवतीर्ण जगद्‌गुरुम् ।

तीर्थ पूज्य पदाम्भोज सुशीला तनयं भजे ।।2।।

महद्भाग्यं महत्पुण्यं प्राप्तं राम प्रसादतः।

सर्वाराध्यं सुरश्लाघ्यं रामानन्द पदाम्बुजम् ।।4।।

अद्‌दढान्नातिविस्तोर्णान्हि त्वयान्दुःखदान्प्लवान्।

आरोहतु महाभागा रामानन्द प्लवं दद्‌ढम् ।।5।।

सुदृढ सुखदं ह्येतत् साधनं भव मुक्तये।

श्री रामानन्दाश्रयणं प्राप्तचेद्भूरि भाग्यतः ।।6।।

आराध्यो भगवान रामो जाप्यं मन्त्र षडक्षरम् ।

गेयं रामायणं यस्य रामानन्दस्य में गतिः ।। 7।।

रामवद्राममन्त्रस्तु जगत्सन्तारणे क्षमः ।

रहस्योद्‌घाटितं येन रामानन्द तमाश्रये ।।8।।

रामानन्दाश्रमो यस्य मिथलायां विराजते ।

आचार्याणां शिरोरत्नं रामानन्दं नमामि तम् ।।9।।

आनन्दभाष्यकर्तारं हर्तार सर्वदूषणम्।

शरणागत भर्तारं रामानन्दं सदा नुमः ।।10।।

ज्ञान क्रिया–भक्तियोगा मोक्षदा इति शुश्रुवम्।

अस्माकं यतिराजस्य चरणौ शरणं महत् ।।11।।

भक्तिदं राम पादाब्जे दग्ध्वान्यद्विषयेषणाम्।

स्नेह स्निग्ध हृदा वन्दे रामानन्द पदाम्बुजम् ।।12।।

दीन हीन कुलोत्पन्नान् सर्वथा वेद गर्हितान् ।

समुद्धर्तु महायोगो ह्यवतीर्णो भूमण्डले ।।13।।

दिव्य गुणगणाम्बोधि स्नेहोर्मिमालिनं यतिम् ।

ज्ञान वैराग्य रत्नाढ्यं रामानन्दं समाश्रये ।।14।।

उद्धारणाय दीनानां यस्यावतरणं क्षितौः।

रामानन्दं सदा शरण्यं तं भुवनाभरणं भजे ।।15।।

सुशीला पुण्य सदनं राघवानन्द देशिकम्।

रामानन्दं सदा वन्दे शिष्यवृन्दैः सुशोभितम् ।।16।।

आचार्य षोडशीमेतां यः पठेद्भक्ति संयुतः।

सर्वाचार्यानुकम्पां सः लब्ध्वाधन्यतमो भवेत् ।।17।।

काश्यांतु पंचगङ्गायां रामानन्दार्य पादुकाम् ।

आचार्य जन्म दिवसे पूजयित्वा पठेत्तु यः।।18।।

स कामानखिलान्प्राप्य पूर्वाचार्य प्रसादतः।

कृतार्थोऽमर कीर्तिश्च सीताराम प्रियो भवेत्।।

श्री मदाचार्यपादानां विरुदावली

श्री मज्जगद्गुरुरामानन्दाचार्य वंशावतंसाः

श्री मद्योगानन्दाचार्य कुलकमल दिवाकरः प्रपत्तिप्रभा प्रकाशकः

वेदान्त दर्शन कर्तारः, प्रस्थान त्रयी भाष्यकारः,

निखिलवेदवेदांगाभंगज्ञानविद्योतितांतःकरणाः, वैष्णवीयविज्ञान विशुद्ध

ब्रह्मबोध चिन्मयलीला–लीलाविलास प्रभृत्यनवद्यगद्यपद्यात्मिकाः,

ब्रह्मविद्याविनोदनोदित प्रमोदपीयूषरसपावनाः,

प्रेमरामायणाख्य नव्यभव्यानेकमहाप्रबन्ध

रचनाचातुर्यविस्फूर्जितस्फारोदार्यशाः,

श्रीमदभगवत्पादारविन्दमकरन्दास्वादचंचरीकाः,भक्तजनमानसराजहंसाः,

मुनीन्द्रदेवेन्द्रनरेन्द्र वंद्याः,

शमदमयमनियमादिमूर्तयश्चन्द्रशुभ्रोरुकीर्तयः,

सुजनहृदयपरमानन्दकन्दलीकन्दा, अलंघ्यमहिमालयाः, पंचरसचार्याः,

श्रीमद्रामहर्षणस्वामिवर्याः विजयन्तेतराम् ।

श्रीमदाचार्यपद पंकजवशवदः

माण्डवीशरण

श्री सद्गुरु सुप्रभातम्

क्र.- 1

संराजते यः परव्योम परेश धाम्नि, श्री राम भाम मुख चकोर भूतः।
सुश्याल भाव सततं परिभावमानः श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।1।।
यः श्री विदेहतनयाग्रज भावपूर्णः, प्रेम स्वरुप परमो भगिनि पदाब्जे।
श्रीलक्ष्मीनिधिः सुगमनाम ललाम आस्ते, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।2।।
हासो विलोक नितरां जगतितलेस्मिन्, प्रेम्णः कृपालु परमो हृदि दूयमानः।
प्रेम प्रसारण हिताय नरावतारः, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।3।।
धन्याकृता स्वजनितोऽवनि भारतस्य, विन्ध्याञ्चलो परम भाग्यमयोविशेषः।
ग्रामश्च धन्यतरतांगत नाम पोंड़ी, श्री रामहर्षण गुरो! तव सुप्रभातम्।।4।।
धन्य कुलं परम भागवतं हि लोके, 'रानीति' नाम जननि तव भाग्यभाजा।
श्रीराम जीवन पिता कृत भाग्यशाली, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।5।।
गौरातिशोभि नव हेमछ्टा ललाम,अंग प्रभा कमल कोमल कान्ति सुभ्रा।
आस्यस्य मञ्जुल मयंक विनिन्द्य शोभा, श्री रामहर्षण गुरो! तव सुप्रभातम्।।6।।
विभ्राजते सुधवलांसुक अंगयष्टौ, भालोर्ध्वपुण्डापरिमण्डित दीप्तपूर्णः।
कण्ठे प्रकाम तुलसी नव दाम शोभा, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।7।।
श्री राम नाम जपतः स्फुरिताधरौष्ठौ, प्रेमाश्रूपूरित मुखाब्ज सभावपूर्णः।
प्रेमातिरेक भर भाव समाधि सक्तः, श्री रामहर्षण गुरो! तव सुप्रभातम्।।8।।
जन्मद्यतः कृत विभो बहु बाल कीडाः,श्री रामहर्षण करा वर राम लीलाः।
माता दुराग्रह वशात्कृत गार्हा लीलाः, श्री राम हर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।9।।
जन्माद्यतः विगतराग विराग युक्तः साधु स्वभावरत वैष्णव अग्रगण्यः।
आराधने रत सदा भगवज्जनानां, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।10।।

नाना पुराण निगमागम तत्व वेत्ता, वेदाग्ध नीरधि सता कुल मण्डनीय :।
साहित्य काव्य रचना रस चक्रवर्ती, श्री रामहर्षण गुरो! तव सुप्रभातम् ।।11।।
त्यक्त्वा जराकवलितां जननी च दारां, प्रोज्झित्य गेह ममतां कुल बान्धवानाम्।
वैराग्य राग रस रञ्जित भावपूर्णः, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।12।।
श्री वैष्णवाग्र रस सख्यवतां वरिष्ठः, आचार्य पञ्च रस दावक भव्यभावः।
अज्ञान ध्वान्त शमनाय प्रचण्ड भानो, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।13।।
लीला रसानुभव मानस राजहंसः, श्री रामरुप नव चन्द्र चकोर नेत्रः।
नामाम्बुमीन हरिधाम निवास लुब्धः, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।14।।
काव्य-कला कल कलाधर नव्यभावः, छन्द प्रबंध रचना रस रीति पूर्णः।
ग्रन्थोन्यनेक विरच्चय कवीन्द्र श्रेष्ठ, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।15।।
प्रेम्णो हि तत्वपरता जगतीतलेऽसौ, संस्थापनाय बहु यत्न परोहि जातः।
रामायणं विरचितं नव वल्लरी च, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम्।।16।।
प्रेम्णः पथानुगतितः कथमानुभूतिः? संजायते हृदि तथा रसतावबोधः ।।
सन्दर्शितं स्वचरितेन महानुभाव! श्री रामहर्षण गुरो! तव सुप्रभातम्।।17।।
प्रेमा समाधिमवलम्ब्य दिनान्यनेक, सन्दर्शितो विरहजो भरतस्य भावः।
चीत्कार घोर भर चाश्रु कलाकुलैश्चैः, श्री रामहर्षण गुरो! तव सुप्रभातम्।।18।।
श्री श्री मृकण्ड तनयस्य शुभाश्रमे वै, प्रेमेति नाम नव साधन रूप यज्ञः।
आयोजितः परम कारुणिकेन येन, श्री रामहर्षण विभो तव सुप्रभातम।।19।।
भूयोपि भूतल तले करुणा परेण , उद्घोषितो तुमल दुन्दुभि तीव्र घोषः।
संकीर्तनस्य नव गौर नरावतार, श्री रामहर्षण गुरो! तव सुप्रभातम ।।20।।
निर्माय सिद्धिसदनं अवधेन्द्र धाम्नि, श्री रामहर्षण निकुञ्ज मनोज्ञ नामा।
अध्यात्म योग रसभक्ति नवीन केन्द्रः, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम।।21।।

दृष्ट्वा भवाम्बुधि-निमज्जनता जनानां, पापीयसां कटु विपाक विदूषितानाम्।
संतारणाय शरणागति दान दाता, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम।।22।।

संस्पर्श दर्शन विकर्षणकारि यस्य, जाता मृगैरिव जना कति जाल बद्धाः।
प्रेमैक बाण विहता जगतः मृतास्ते, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम।।23।।

चैतन्यचन्द्ररिव कीर्तन दैन्य भावे, काव्यकृतावभिनवो तुलसी कवीन्द्रः।
प्रेम प्रकाशन हिताय रसावतारः, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम।।24।।

श्री मैथिलेन्द्र तनया रघुनन्दयोर्यः, वैवाहिकोत्सव विलोकन जात हर्षः।।
सानन्द सात्विक विकार विपूर्ण गात्रः, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम।।25।।

श्रीरामनाम लिखितं बहुशोहि बारम्, दृष्टं महापुरुष ते मृदु गौर-गात्रे।
श्री राममन्त्रमवलोकित ते शरीरे, श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम।।26।।

जिह्वेन्द्रियस्य रस वर्जित जीवन ते,आहार मिष्ठ लवणादि विनैव यातम्।
तस्मात्कुतो अपर ऐन्द्रिय सौख्य प्रश्नः? श्री रामहर्षण विभो! तव सुप्रभातम।।27।।

ते मंगलं हि विदधन्तु सुरेन्द्रवर्याः, दैत्याः नराः मृग नगाः पशु पक्षिणश्य।
सप्तार्णवो नदिनदाः ग्रह वन्यदेशाः, सर्व चराचर करोतु सुमंगल ते।।28।।

क्षेमाय ते भवतु नाथ मदीय पुण्यं, क्षेमाय ते भवतु नाथ! मदीय आयुः।
क्षेमाय ते भवतु नाथ! मदीय ज्योतिः, क्षेमाय ते हि सततं मम सर्व भावाः।।29।।

सन्मंगलाय जगतां हि नरावतारः,कल्याण कल्पतरु चासि सदा जनानाम्।
क्षेमं मुदा वितर नाथ! निज प्रसादम् साष्टांग कंज पदयोर्प्रणतोस्मि दीनः।।30।।

प्रेमाचार्य समुत्तिष्ठ उत्तिष्ठ करुणानिधे! गुरुवर्य! समुत्तिष्ठ, लोकानां मंगलं कुरु।।31।।

हरिगोविन्द दासेन, रचित सुप्रभातकम्। यो वै प्रातः पठेन्नित्यं, मंगल तस्य सर्वदा।।32।।

"सुप्रभातम्" की टीका

परब्रह्म परमात्मा के परव्योम (साकेत) नाम धाम में जो श्री लक्ष्मीनिधि (जनकात्मज)नाम से श्याल भाव को प्राप्त, श्री राम भाम (बहनोई) के मुखचन्द्र के चकोर बने हुये विराजते हैं, हे श्री गुरुदेव! आपका सुप्रभात हो अर्थात प्रभातकाल मंगलमय हो।। 1।।

जो परम प्रेम स्वरुप, श्री लक्ष्मी निधि जैसे सुन्दर नाम से अभिहित श्री विदेहराज नन्दिनी (श्री रामप्रिया आद्याशक्ति) के श्री चरणों में बहिन के भाव से भावित हैं- हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।2।।

जो परम प्रेम एवं कृपामय देव (श्री लक्ष्मीनिधि) पृथ्वी तल पर प्रेम के ह्रास को परिलक्षित कर हृदय में दुखी होकर (परव्योम धाम से) मानव अवतार धारण कर आये हैं, हे श्री गुरुदेव! आपका सुप्रभात हो ।।3।।

जिन्होंने अवतार धारण कर भारत भूमि को धन्य बनाया और विशेषतया विन्ध्याचल को भाग्यवन्त किया, साथ ही जिनके जन्म से पौड़ी ग्राम भी धन्यता को प्राप्त हुआ, हे श्री गुरुदेव! आपका सुप्रभात हो ।।4।।

(आपके जन्म से) आपका परम भागवत कुल संसार में धन्य हुआ। श्री रानी (सुनैना जी) नाम जननी और श्री राम जीवन शरण को पितृ पद प्रदान कर कृतार्थ किया है- हे श्री गुरुदेव! आपका सुप्रभात हो ।।5।।

(जिनकी) अंग कान्ति नवीन स्वर्ण की प्रभा के समान गौर, कमल के समान कोमल और सुन्दर तथा मुख की छटा सुन्दर चन्द्रमा की शोभा को लज्जित करती है- हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।6।।

जिनके सुन्दर अंग पर श्वेत वस्त्र परिलसित है, सुन्दर भाल पर ऊर्ध्व पुण्ड्र सुशोभित है और कण्ठ प्रदेश नवीन तुलसी की माला (कण्ठी) से युक्त है- हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।7।।

श्री सीताराम नाम के निरन्तर जप से जिनके अधर और ओष्ठ आन्दोलित होते रहते हैं। भावमय मुख कमल प्रेमाश्रु बिन्दुओं से परिपूर्ण रहता है और आध्यात्मिक भावों से भरकर जिनका मन समाधि को प्राप्त हो जाता है – हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।8।।

हे महिमा महिम्न! (आपने) जन्म से लेकर अनेक मधुर शिशु क्रीड़ायें की हैं, भगवान श्री राम को प्रिय लगने वाली अनेक श्री रामलीलायें बाल्यकाल में की हैं तथा माता जी के दुराग्रह से विवाह बन्धन में पड़कर (कुछ समय) एक सद्गृहस्थ की लीला की है – हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।9।।

जीवन के प्रारम्भ से ही जो समस्त ऐहिक रोगों से रहित एवं परम वैराग्य पूर्ण रहे, साधु स्वभाव से युक्त होकर वैष्णव पथ में मूर्धन्यता प्राप्त की और सदैव वैष्णवाराधन में निरत रहे – हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।10।।

जो श्रुति, शास्त्र और पुराणों के तत्वों के श्रेष्ठ ज्ञाता हैं।, विद्वता के समुद्र, सज्जन कुल को महिमान्वित करने वाले और काव्य साहित्य रचना के मर्मज्ञ चक्रवर्ती सम्राट हैं – हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।11।।

जो अपनी वृद्धा माता तथा पत्नी, घर और कुल बन्धुओं की ममता को वैराग्य रस से ओत-प्रोत होकर त्याग कर चले आये - हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।12।।

जो श्री वैष्णवों में अग्रगण्य, सख्य रस के रसिकों में श्रेष्ठ, सुन्दर भावों से परिपूर्ण पंचरसों के प्रदाता-पंचरसाचार्य हैं तथा अज्ञानरुपी अन्धकार के नाश के लिए प्रखर सूर्य की भाँति हैं - हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।13।।

जो श्री सीतारामजी की लीला-रस-मान सरोवर के सुखानुभूति कारक राजहंस, जिनके नेत्र श्री रामजी के रुप चन्द्र के चकोर, श्री सीताराम नाम जल के प्रेमी मत्स्य और भगवद्धाम निवास के लोभी हैं - हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।14।।

जो काव्यकला के सृजन में चन्द्रवत अमृतमय हैं, नवीन भावों से युक्त छन्द प्रबन्ध रचना में सम्बंधित श्रेष्ठ रस और रीतियों से परिपूर्ण हैं तथा जिन कविन्द्र ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है - हे श्री गुरुदेव! आपका सुप्रभात हो ।।15।।

धरातल पर प्रेम तत्व के परत्व (श्रेष्ठता) के स्थापन के लिए जिन्होनें अनेक प्रयत्न परायण होकर, श्री प्रेम रामायण तथा प्रेम वल्लरी की रचना की है, हे श्री गुरुदेव! आपका प्रभात मंगलमय हो ।।16।।

प्रेम पथ के आनुगत्य (अनुसरण) से हृदय में रसमयता का अनुभव कैसे होता है, यह आपने अपने आचंरण में आदर्शरुप में प्रकट किया है - हे महानुभाव गुरुदेव! आपका सुप्रभात हो।।17।।

अनेक दिनों तक आपने प्रेम-समाधि लेकर, भयंकर चीत्कार और अश्रुपरिपूर्ण नेत्रों से श्री भरत जी की विरहाकुला दशा

दशा को प्रकट कर दिखाया, - हे गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।18।।

जिन्होंने (करुणामय) श्री मार्कण्डेय आश्रम में साधकों को परमार्थ साधना कि शिक्षा देने के लिए प्रेम यज्ञ का आयोजन किया था ! हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो ।।19।।

हे अभिनव गौरांग चैतन्यावतार आपने एक बार पृथ्वी पर पुनः संकीर्तन का तुमुल दंदुभिघोष कर दिया - हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।20।।

जिन्होंने नवीन आध्यात्मिक भक्ति रस योग के केन्द्र के रुप में श्री अयोध्या धाम में श्री सिद्धि सदन- श्री रामहर्षण कुंज का निर्माण करवाया - हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।21।।

संसार के पाष्ठि जनों के दुर्ष्कर्मो के दुष्फल परिणाम स्वरुप भव प्रवाह में डूबता हुआ देखकर उन्हें भगवत शरणागत रुप संतरण का उपाय जिन्होंने बताया - हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।22।।

जिनका दर्शन और स्पर्श अत्यन्त ही आर्कषणकारी है, जिसमें कितने ही लोग मृग की भाँति फँसते रहते हैं और प्रेम रुपी बाण से बिंधकर संसार से मर जाते हैं अर्थात् संसृति जाल से मुक्त हो जाते हैं- हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।23।।

जो कीर्तन और दैन्यभाव से साक्षात् श्री चैतन्य महाप्रभु के अवतार हैं। काव्य रचना की महनीय कला में अभिनव कविश्रेष्ठ श्री तुलसीदास हैं तथा प्रेमतत्व के प्रचार-प्रचार के लिए साक्षात् प्रेमरस के अवतार हैं-हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।24।।

जो श्री विदेहतनया और श्री रघुनन्दन राम जी के विवाहोत्सव के दर्शन के हर्षोल्लास से परिपूर्ण हैं। अश्रु आदि अनेक शाब्दिक भावों से भर जाते हैं। हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।25।।

हे महापुरुष ! आपके गौर शरीर में अनेक बार श्री राम नाम तथा श्री मन्त्रराज स्पष्ट लिखा देखा गया है–हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।26।।

जिनका जीवन रसनेन्द्रिय के मीठे और नमकीन स्वाद से सदैव रहित रहा उनकी अन्य इन्द्रियों के रस की प्रबलता का प्रश्न ही कहाँ उठता है–हे श्री गुरुदेव आपका प्रभात मंगलमय हो।।27।।

आपका इन्द्रादि श्रेष्ठ देवता, दैत्य, मानव,मृग,पर्वत ,पशु–पक्षी सातों समुद्र, नद, नदियां, गृह और वन मंगल विधान करें ।।28।।

हे–नाथ ! मेरा पुण्य, मेरी आयु और मेरी नेत्र ज्योति आपका मंगलमय विधान करे।।29।।

हे श्री गुरुदेव! संसार के मंगल विधान के लिए ही आपका यह मानव अवतार हुआ है। आप स्वजनों के कल्याण के लिए साक्षात् कल्प तरु है, यह दीन आपक समक्ष साष्टांग प्रणत है, आप कृपया परम् कल्याणरुप प्रसाद प्रसन्नता से प्रदान करें।।30।।

हे श्री प्रेमाचार्य! हे करुणा के सागर! गुरु देव आप उठें और जगत का कल्याण करें ।।31।।

हरि गोविन्द दास द्वारा विरचित इस सुप्रभातम् का जो जन नित्य प्रातः पाठ करेंगे, उनका सदैव सर्व विधि मंगल होगा।।32

" श्री आचार्य महाप्रभु की आरतियाँ "

(1)

वैष्णव वृन्दे वन्द्यं वन्दे, श्री गुरुमधिकमुदारम्।
रसिक जनेषु वरिष्ठं भुवने, प्रेम भक्ति दातारम्।।1।।
शिव स्वरूपमहेतु कृपालुं, कल्पतरुं हृदयेशम्।
सततमचिन्त्यं भजे कृपाब्धिं, देवमनादिमशेषम्।।2।।
जगदुद्धर्तु भुव्यवतीर्ण, मृदु गौरांग स्वरूपम्।
प्लवमति दुस्तर संसृति जलधौ, मंजुल मुर्तिमनूपम्।।3।।
कोऽपिकुतोऽपि कदापि ऋतेऽयं, लभते नात्मप्रकाशम्।
स मयि करोति कृपां प्रपन्ने, कुर्वन मनसि विलासम्।।4।।
परम मलीनः अतिशय दीनः, शिरसा पदे नतोऽहम्।
सिञ्चय सततमुरसि मे स्नेहं, हत्वा विषय विमोहम्।।5।।

(2)

कलि कुटिल जीव उद्धारण भव तारण हे-
जय-जय परम उदार श्री गुरुदेव हरे।।1।।
सिय राघव रुपोपासक तमनाशक हे-
परम प्रेम अवतार श्री गुरुदेव हरे।।2।।
रोमांचित गात सुहावन छबि छावन हे-
श्रवत नयन रसधार श्री गुरुदेव हरे।।3।।
गौरांग दिव्य द्युति पावन दुख दावन हे-
परम कृपा आगार श्री गुरुदेव हरे।।4।।
मृदु मैथिल प्रेम प्रकाशक रस शासक हे-
रस पंच पूर्ण आचार्य श्री गुरुदेव हरे।।5।।
प्रेमा भक्ति प्रदायक, सुखदायक हे-
दास किशोर आधार श्री गुरुदेव हरे।।6।।

(3)

सुहाई शुभ आरती गुरुवर की,

जगाई जग प्रेम ज्योति सियवर की।

ज्ञान रश्मि युत तेज सुहावन,

जन मन मानस करत सुपावन।

मधु मूरति मनहारी, सुछाई छबि दिवि अमृत हिमकर की।।

शुद्ध स्वर्ण सम गौर सुभग तन,

अनुपमेय अति स्वच्छ अमल मन।

नयन नेह रसधारी, लोनाई लोनी ललित लाल निमिवर की।।

त्रय रहस्य विज्ञान ज्ञान वर,

रचेउ भाष्य प्रस्थान त्रयी पर।

शरणागति भयहारी, लखाई सूधी राह परम पद पर की।।

प्रेमिन सर्वस प्रेम रामायण,

प्रगटि किये जन प्रेम परायण।

चरितावलि रस सारी, सुगाई शुचि सिद्धि विदेह कुँवर की।।

नाम रुप लीला रस वर्षहिं,

लखि लखि सीय राम हिय हर्षहिं।

मैं मेरो बलिहारी, बहाई सरि प्रीति रसिक रस धर की।।

जै गुरु श्री राम हर्षण देवा,

सारी राम पनहियन सेवा।

"बल्लभ" जय जय कारी, मनाई मुद मंगल मंगल कर की।।

(4)

आरति मंगलयमय गुरुवर की, मूरति मधुर प्रेम रसधर की
गौर गात श्वेताम्बर साजे, भाल विशाल तिलक छबि छाजे,
तुलसिमाल कर पंकज राजे, भावधनी भव तम रविकर की।।आ0।।
हृदय हार फूलन को सोहैं, विमल तेज लखि मुनि मन मौहे,
वरणि सकै अस जग कवि कोहै, प्रीति रीति वर्धन भ्रमहर की।।आ0।।
पद पंकज पराग गुणकारी, नख ज्योत्सना अमिय अरुणारी,
सेवत मन क्रम दास बिहारी, भक्ति ज्ञान वैराग्य सुघर की।।आ0।।

(5)

जन उर तम हर सुखकर की, कीजै शुभ आरती श्री गुरुवर की।
श्रद्धा हिय थार बाती प्रेम की सम्हार, परम मुदित मन आरती उतार।
जन उर कंज हित दिनकर की, कीजै शुभ आरती श्री गुरुवर की।।1।।
श्री गुरुदेव शुद्ध प्रेम के स्वरुप, नर तन धरि आये रसिकन भूप।
विमल मयंक जन नभ उर की, कीजै शुभ आरती श्री गुरुवर की।।2।।
गौर वर्ण भ्राजे घृत धवल सुचीर, भव्य भाव भरित श्रवत दृग नीर,
सीताराम रटत अधर वर की, कीजै शुभ आरती श्री गुरुवर की।।3।।
केते जन अधम उधारे कृपा कोर, हरि रस प्याय किये प्रेम विभोर,
गोविन्द के सदा हितकर की, कीजै शुभ आरती श्री गुरुवर की।।4।।

(6)

जग मंगल कर की, आरती करिये गुरुवर की।

भव्य गौरवर वरण विराजे,

धवलाम्बर अंगन पर साजे,

तिलक रेख माला उर भ्राजे,

मंजुल छबिधर की, आरती करिये गुरुवर की ।।1।।

कर पद पंकज मृदु अरुणाई,

सुभग रेख शोभा अधिकाई,

नख द्युति तेज पुंज छबि छाई,

रवि शशि द्युतिहर की, आरती करिये गुरुवर की।।2।।

श्रवत नयन प्रेमामृत धारा,

ज्ञान विराग प्रेम आगारा,

पुलकावलि तन पूरि अपारा,

जन हिय तम हर की, आरती करिये गुरुवर की ।।3।।

दिव्य अनूप सिंहासन राजे,

चँवर छत्र अभिनव छबि छाजे,

सुमन झरत बाजत बहु बाजे,

गोविन्द सुखकर की, आरती करिये गुरुवर की।।4।।

(7)

ॐ जय सद्गुरु स्वामी, ॐ जय गुरुवर स्वामी।
जन मन मानस हंस श्रिय पति अनुगामी ।। ॐ जय....
गौर वर्ण तन कान्ति अनूपम दिव्याम्बर राजै,
ऊर्ध्व पुण्ड्र वर भाल दिव्य पै निरखत तम भाजै।। ॐ जय...
अभय हस्त जन अभय करन हित वरदायक सोहै।
तुलसिदाम गल, नयन अम्बु, शरणागत जन जोहै।। ॐ जय...
विरचि अमित सद्ग्रन्थ सुरसमय, जीवन लाभ दियो,
शरणागति दीक्षा प्रदान करि, विमुखन शरण लियो।। ॐ जय...
तव अनुकम्पा पाय अमित जन, आनन्द प्राप्त करें।
भाष्यकार यतिराज वचन मृदु,चेतन पीर हरें।। ॐ जय....
उभय चरण की शरण दास सब, आवत सुख पावै,
दास श्याम गुरु पदुम पाद की, सेवा मन लावै।। ॐ जय...।

(8)

आरति कीजै श्री गुरुवर की, युगल पीति परमिति तनुधर की।
गौर शरीर पीतपट भ्राजै, भाल विशाल तिलक अति राजै,
तेज पुंज लखि उर तम भाजै, कंठी कंठ माल छबिधर की।।
अमित बोध घन चित अविनाशी, विरज ब्रह्म नर तन सुख रासी,
प्रेम पयोनिधि सतत विलासी, प्रबल ज्ञान-रवि उर तम हर की।।
भुक्ति मुक्ति रस राशि प्रदायक, सहज कृपालु सुखद सब लायक,
विमल चन्द्र जन-उर अम्बर की, आरति कीजै श्री गुरुवर की ।।
सन्तत सीय राम अनुरागी, स्रवत नयन रोमावलि जागी,
नित नव युगल योग सुख भागी, युगल चरण पंकज मधुकरकी।।
जननि जनक सम हित निज जन के, हरण दोष दुख दारुण मन के,
दायक युगल प्रीति रस धन के, गोविन्द के सबविधि हितकर की।।

(9)

अपने गुरुवर की आरती उतार लीजिये,
उतार निज जीवन सुधार लीजिये ।।
श्रद्धा-स्वर्ण-थारी, शुभ-सुमन सजाइये,
हृदय के नेह सींचि ज्योति जलाइये,
प्रीति भरे अश्रुबिन्दु दृग सँवार लीजिये।।
आत्मा वसन अंग उज्जवल समान है,
सुन्दर सुभग सन्त वेष में महान हैं,
राखि नित्य निज हिय में श्रृंगार कीजिये।।
हृदय के बीच सिया राम झलकात हैं,
युगल के हिये गुरुदेव सरसात है,
इनमें अन्तर कहाँ है सो निहार लीजिये।।
जब लगि धरा सूर्य चन्द्रमा सुहावने,
दर्शन देवे गुरुवर सुख के लुभावने,
दास सुमन वरषि जै जै कार कीजिये।।

(10)

आरति सदगुरु की कीजै मधुर छबि नैननि रखि लीजै।

स्वर्ण सम गौर सअँग सोहै, ,

अरुण पद कमल सुजन जोहैं,

सुनख द्युति भक्तन मन मोहैं,

श्वेत वर वसन, मधुरं मधु हसन, नाम प्रिय असन,

दरश लहि जन्म सुफल कीजै। मधुर छबि0 ।।1।।

सतत सेवत श्री सीताराम,

भाव दृढ़ भलो भगिनि अरु भाम,

पनहियाँ प्रभु की पूज ललाम,

मोद हिय भरत, सुदृग रस झरत, जीव लखि तरत,

प्रेम रस इनके बनि पीजै। मधुर छबि0 ।।2।।

बाह्य–अन्तर–शुचि साधु स्वरुप,

भक्ति वैराग्य ज्ञान के रुप,

ब्रह्म प्रगटे बनि वैष्णव भूप,

शरण लखि द्रवैं, कृपा अति करैं प्रेम हिय भरे,

समर्पित हो अनुभव कीजे । मधुर छबि0।।3।।

गगन सम (श्री) हर्षण देव महान,

देत नित दासन दया सुदान,

विराजैं बिहसत कृपा निधान,

अमर विधि करैं, अमित सुख भरैं, सुमन सुर झरैं,

'दास' जयकार करत जीजें। मधुर छबि0।।4।।)

(11)

आरति सद्‌गुरुवर उदार की, कलि कल्मष हर, निर्विकार की।

नव गौरांग प्रणत हितकारी,

प्रेममूर्ति पीताम्बरधारी।

चारु चन्द्र आभा सुखकारी।

कृपा सिन्धु हरि नराकर की, आरति सद्‌गुरु........... ।।1।।

अति प्रसन्न मुख कमल ललामा।

रटत निरन्तर हरि गुणग्रामा।

छवि निधान परमारथ धामा।

आश्रित वत्सल कृपागार की, आरति सद्‌गुरुवर .... ।।2।।

यति–सम्राट स्वराट अनूपा,

वैष्णव वृन्द सुपालक भूपा,

समदर्शी आनन्द स्वरुपा,

छवि निधान सन्तन श्रृंगार की, आरति सद्‌गुरु........... ।।3।।

राजत सिंहासन सुखकारी,

छत्र चमर धर मंङ्गलकारी,

लीला मानस सलिल बिहारी,

परिकर मंडित रसाकर की, आरति सद्‌गुरुवर........... ।।4।।

सीताराम मिलित विग्रह वर

सुमनमाल तुलसी सुदाम धर,

कर पद अरुण महा सुषमाकर,

जय ''किशोर'' करुणावतार की, आरति सद्‌गुरुवर....... ।।5।।

(12)

आरति कीजै सद्‌गुरुवर की, करुणासिन्धु-सरस-सुन्दर की।।
सद्‌गुरु महिमा वेद बतावैं, शास्त्र-पुराण-ग्रन्थ सब गावैं,
सिद्ध-सन्त, मुनि सुजन सुनावैं, त्रिविध तापहर-अति-सुखकरकी।।1।।
सद्‌गुरु ब्रह्मा-विष्णु महेश्वर, परब्रह्म-साक्षात्-परेश्वर,
परमाचार्य-सगुण-सर्वेश्वर, मानव-देह-रुप श्रीधर की।।2।।
महा-मोह-तम-पुञ्ज-विनाशक,भक्ति-ज्ञान-रवि-किरण-प्रकाशक,
सिया राम पद कंज उपासक, आश्रितजन-शुभ मङ्गलकरकी।।3।।
सद्‌गुरु-पद पङ्कज अति-पावन,मानस-मन्दिर-मोद-बढ़ावन,
लोक सुखद परलोक वसावन, जय श्री रमण प्रणत हितकर की।।4।।

सद्‌गुरु - स्तुति

भावाम्बुधौ संतत साश्रु मग्नं, लीला रसज्ञं रसिकावलम्बम्।
भक्तेषु पूज्यं मृदु गौर मूर्ति, वन्दे गुरं तं परमं शरण्यम्।।1।।
संसार सिन्धो पतितोह्यगाधे, मोहान्धपूर्णे विषयातिसक्तः।
कृपावलम्बं मम देहि नाथ, हे गौर हे सुन्दर हे समर्थ।।2।।
न निन्दितं कर्म तदस्ति लोके, सहस्त्रशोऽयं न मया विधाय।
सोऽहं विपाकावसरे कृपालो क्रन्दामि सम्प्रत्यगतिस्तवाग्रे।।3।।
न धर्मनिष्ठोस्मि न चात्मवेदी न भक्तिमान्स्त्वच्चरणारविन्दे।
अकिञ्चनोऽनन्य गतिः शरण्यं, त्वत्पाद मूलं शरणं प्रपद्ये।।4।।
अभूतपूर्व मम भावि किंवा,सर्व सहे में सहजं कि दुःखम्।
किन्तुत्वदग्रे शरणागतानां, पराभवो नाथ न तेनुऽरूपः।।

(13)

जय जय मतिमाना, ज्ञान निधाना, जनेष्ववतंसा।
नव नव रस भीना, परस प्रवीना, लीला मानस हंसा।।1।।
वयमति दीना, भव रसलीना, प्रणतार्तापद्‌मान्घ्रितले।
कीजिय आनन्दित जय जग बन्दित श्री गुरुदेव कृपालु हरे।।2।।
छबि युगल निहारत, देह विसारत, मैथिल भाव बिहारी।
कीजिय प्रभु दाया हरु मद माया, वैष्णव वृन्द सुखारी।।3।।
श्री हरि गुण गायक, रसिकन नायक,पुलकित गौर सुगाता।
अति भव्य स्वरुपा,भक्तन भूपा, प्रेमामृत रसदाता।।वयमति।।4।।
जय पाहन द्रावक,अविरल जापक,नाम नयन जलढ़ारी।
अति मृदु सद्‌भाषी, प्रेमप्रकाशी, जय जग मंगलकारी।।वयमति।।5।।
रत सीय विवाहे, परम उछाहे, भावाविष्ट विभोरा।
करि करि छबि पाना, भूलत भाना, श्री रघुचन्द चकोरा।।वयमति।।6।।
तिलकांकित भाला, धृत उर माला, धवलाम्बर मतिधीरा।
मुख मधुर सरोजा, अनुपम ओजा, श्रवत प्रेम रस नीरा।।वयमति।।7।।
श्रुति शास्त्र सुपंडित, परिकरमंडित, व्यासासन आरुढ़ा।
नय निपुण विशेषा, हरत कलेशा, तत्व बतावत गूढ़ा।।वयमति।।8।।
करि हिये निवासा, कुरु अघनासा, हे शिवरुप उदारा।
पूरिय अभिलाषा, (श्री) राम हर्षण दासा, श्री गुरु ज्ञान अगारा।।9।।

आरती जन हितकारी की,
कि सद्‌गुरु भव भय हारी की।
नख शिख सुन्दरता आली,
ऊर्ध्व पुण्ड्र तिलक रेख लाली,
अरुण पद पंकज की लाली,
नासिका न्यारी, अधर अरुणारी, नयन शुभकारी
स्वर्ण छवि अँग मनहारी की। कि सद्‌गुरु.........।।
धरा पे प्रगट भये बनि लाल,
जनन के दुख लखि दीन दयाल,
कृपा करि जीवहिं कियो निहाल
करुणा के निधान, दियो मन्त्र दान, दीन जन जान
ऐसे सद्‌गुरु दानी की। कि सद्‌गुरु.........।।
गौर अंग श्वेताम्बर धारी,
सतत सीतारामहिं उच्चारी,
पंच रस के हैं आचारी,
सिया जू के भ्रात, प्रेम सौगात, जय हो रानी मात
राम जी के प्रेम पुजारी की। कि सद्‌गुरु.........।।
कीरति जग में है छाई,
निष्ठा प्रेम भजन गाई,
सीताराम दास बलि जाई
सुमन सुर झारी, करें जयकारी, उमंग है भारी,
जब लग अहि महि धारी की। कि सद्‌गुरु......।।

(15)

अनुपम आरति आरतिहर की।

प्रेमाचार्य श्री सद्गुरुवर की,

करिये जन–जन के दुखहर की।।

तप्त कनक सम गौर मुखाम्बुज,

श्वेत वसन धारे छविवर की।।

उन्नत भाल तिलक भल सोहै,

ऊर्ध्व पुण्ड्र रवि शशि द्युतिकर की।।

भगति विवेक विज्ञान विरति रति,

प्रगटे एकहिं वपु रसधर की।।

नाम रुप लीला अरु धामहिं,

रमे रहत नित करुणाकर की।।

वेद धरम अरु आर्य पथहिं को,

शिक्षत जगत स्वयं अनुहर की।।

दारिद दोष दुराश दीनता,

कलि कालुष्य भीति भ्रम हर की।।

देत आश्रितहिं अचल परम पद,

सुखद सेव श्री सिय सियवर की।।

राम नरेन्द्र दास सो अधमन,

राखि शरण पालत सुखकर की।।

(16)

मंजुल मंगल आरती, गुरुवर की करिये।
रसमय छवि रसराज की,लखि आनन्द भरिये।।
गौर वर्ण श्वेताम्बर धारे।
भाल तिलक द्युति सब मन हारे।।
सात्विक भाव उदित अँग सारे।
मनहर ज्ञान विराग की,छवि लखि सुख पगिये।।
मृदुल–मृदुल मुस्कान विखेरत।
जीवन काँहि कुपथ ते फेरत।
परम लक्ष्य हित मन को प्रेरत।
भव्य रूप भल भ्राज की, सब आरति करिये।।
तुलसि माल कर कमलनि सोहै।
वरणै छवि अस कवि जग कोहै।
सुर नर मुनि छवि देखि विमोहै।
जन उर परम प्रकाश की, अन्तर बिच धरिये।।
प्रेमामृत रस वरसत नयनन।
रसिकन हित जो है चित चयनन।
राम नरेन्द्र दास जीवन धन।
सिय पिय प्रेम प्रदायकी, प्रीतम छवि लखिये।।

।

आरती मोद मयी मनहारी।
मुदित उतारहिं सब हिलि–मिलि कर,
प्रीतम प्रेम प्रसारी।
सुन्दर स्वर्ण सरिस शुभ श्री वपु,
श्वेत वसन उजियारी।
कोमल कलित ललित श्री अंगन,
भाल तिलक द्युतिकारी।
जन उर तिमिर विनाशि प्रकाशक,
भव भय भ्रम संहारी।
भक्ति ज्ञान वैराग योग यग,
कृप करुणा वपु वारी।
सच्चिद आनँद मय वर विग्रह,
सिय पिय हृदय विहारी।
भक्तन देवत अपनों सर्वस,
नरेन्द्र दास बलिहारी।

आचार्याष्टक

मङ्गल गुरुवर्याय, महनीय कृपाब्धये,

दासानां सुखरुपाय प्रेमरुपाय मङ्गलम् ।।1।।

वेद–वेदान्त विज्ञाय, सच्चिदानन्द रुपिणे,

भक्तानामनुकम्पार्थ नर रुपाय मङ्गलम्।।2।।

तिलकांकित भालाय, गौराङ्गाय महात्मने,

वैऽणवेष्वग्रगण्याय, भव्य रुपाय मङ्गलम्।।3।।

नित्यं जनक नन्दिन्याः भ्रातृ–भाव विलासिने,

राम–प्रेम स्वरुपाय पुलकाङ्गाय मङ्गलम् ।।4।।

नाम रुपश्च धाम्नाम्वै, परमा प्रीति प्रदर्शिने,

लीला स्वाद रसिकाय, साश्रु नयनाय मङ्गलम्।।5।।

भक्ति–ज्ञान–विरागाणां, शास्त्र तत्व निदर्शिने,

सर्व शंकाच्छिदे तस्मै, परम कुशलाय मङ्गलम्।।6।।

दुखः–शोक–भय–व्याधि, मनो मालिन्य हारिणे,

सर्व सिद्धि प्रदात्रे च, कृपा रुपाय मङ्गलम्।।7।।

भक्त वृन्देषु पूज्याय नरकार्णव तारिणे,

दास–मानस हंसाय नमः मङ्गल रुपिणे।।8।।

ये मङ्गलाष्टकमिदं हि पठन्ति नित्यम्,

गोविन्ददास रचितं मृदु भाव पूर्णम्।

पापान्विधूय गुरु देव दयावशाद्वै,

सद्यः सुखेन नव प्रेमरसं लभन्तें।।9।।

श्री सद्गुरुदेव मंगलाष्टक

मङ्गलं प्रेमरूपाय सदानन्दाम्बुवर्षिणे,

गौरवर्णाय दिव्याय गुरुवर्याय मंगलम्।।

भव्यभालोर्ध्वपुण्ड्राय भक्तानां भयहारिणे,

उत्फुल्लाब्ज सुनेत्राय मन्दस्मिताय मंगलम्।।

वक्षस्थल विशालाय आजानुभुजधारिणे,

शुभ्राय कम्बुग्रीवाय मंजुलास्याय मंगलम्।।

मसृणारुणपादाय पुष्पाद् मृदुतराय च,

संवेष्टितोर्ध्वरेखाय अघशमनाय मंगलम्।।

सख्यमैथिल भावे च स्वं संस्थाप्य महीतले,

विदेहसूनुरुपाय रसराजाय मंगलम्।।

आलोड़ितशास्त्राय निगमादीन् सम्प्रमथ्य वै,

प्रस्थानत्रयभाष्यस्य निर्मात्रे च मंगलम्।।

शंखचक्रांकुशैश्चिन्है, वेष्टितौ पादमञ्जुलौ,

ध्यातातापापहाराय पूतांगाय मंगलम्।।

सीतारामेति रामेति जपन् रोमोद्गमैश्च यः,

रामांकित देहाय चिदानन्दाय मंगलम्।।

नित्यं स्मरन्ति गुरुमंगलमष्टकात्मकं,

ये श्रध्द्या च सियवल्लभदास निर्मितम्।।

श्री जानकी सहित राम सदाऽनुकूलो,

भक्तिं प्रयच्छति पुनश्च गुरोः प्रसादम्।।

श्री सद्‌गुरु जन्म आरती

(18)

सखि हे आरती उतारु रानी नन्दन की।

राम जीवन जु के प्राण संजीवन, प्रेमिन रसिकन के सर्वस धन,

माई रानि के अञ्चलनिधि की ।। सखि हे।।1।

पौंड़ी जन मन हरण सलोने, मधुर मूर्ति रसमय रस भौने,

अमृत मय प्रिय छबिधर की ।। सखि हे।।2।

भुज अजानु तिलकांकित भाला, मनु रस रुप राम को श्याला,

शशि रति मन्मथ मनमथ की ।। सखि हे।।3।

तुलसी माल ग्रीवा भल राजत, सुखमय मातु के अंक विराजत,

नाम अधर प्रिय प्रियतम की ।। सखि हे।।4।

अंग अंग परम सुडौल मनोहर, सिय साजन के हृदय धरोहर,

बड़री कलित सु अँखियन की ।। सखि हे।।5।

आनन्द वर्धन माँ रानी के, जीवन मूरि जगत प्राणी के,

ललित ललाम ललन वर की ।। सखि हे।।6।

प्रेम मूर्ति जनु सियारमण के, चितवत मुसुकत हरत मनन के,

रसिकन हिय रस वर्षन की ।। सखि हे।।7।

सकल जीव करुणाकर प्यारे, सीताग्रज सम अमित उदारे,

दास श्याम सुन्दर प्रभु की ।। सखि हे।।8।

श्री गुरुपद-पद्म-पादुकाओं की आरती

आरति श्री गुरु-पद-पाँवरि की।
श्री गुरुदेव पद्म-पद विलसित, महामहिम अति आनँद करि की।
योग-ज्ञान-वैराग्य-प्रेम सुख, साधन-सिद्धि साध्य तनुधरि की।
आश्रित जन की परम देवता, जीवन-प्राण सुरस सागरि की।
भुक्ति-मुक्ति-अनुरक्ति प्रदायिनि, मोह विटप कुठारि नागरि की।
आश्रय परम दास गोविन्द की, श्री गुरु कृपा सुरस निर्झरि की।

श्री गुरुपद पाँवरी-प्रार्थना

जय जयति गुरु पद पादुके, जय जयति सब दुख हारिणी।
जय जयति जय-भव-रुज विनाशिनि, परम आनँद कारिणी।।
जय योग-ज्ञान-विराग आगरि, प्रेम-मूरति धारिणी।
अक्षुण्ण निर्झर भाव रस की, जन उरसि विस्तारिणी।।
जय जयति गुरु करुणा सु तनु धरि, भक्त जन मन हारिणी।
आश्रित सुजन की परम आश्रय, सतत मनसि विहारिणी।।
हौं सकल साधन हीन गोविन्द, शरण भवनिधि तारिणी।
कीजै कृपा की कोर दीजै भक्ति रस संचारिणी।।

श्री गुरु पद पद्म पादुकाना मंगलानुशासनम्

मंगलं गुरुवर्यस्य, पादपंकजयोस्तले ।
स्पर्शात् दिव्य रुपाभ्यां, पादुकाभ्यां सुमंगलम् ।।1।।

श्री सद्गुरुदेव जी के चरण कमलों के दिव्य स्पर्श से स्वरुप को प्राप्त श्री गुरुपादुकाओं का मंगल हो।

मंगलानन्द रूपाभ्यां, गुरुवर्यस्य कृपाम्बुधेः।
युग्माभ्यां चारुरत्नाभ्यां, पादुकाभ्यां सुमंगलम् ।।2।।

मंगल और आनन्द के साक्षात स्वरूप तथा गुरुजी के कृपारूपी महासागर के जाज्वल्यमान रत्न भूत श्री गुरुपद पादुकाओं का मंगल हो।

मंगलम् मज्जमानाना, माश्रितानां भवाम्बुधौ।
संतरणाय सुनौकाभ्यां, पादुकाभ्यां सुमंगलम् ।।3।।

भवसागर में डूबते हुए श्री गुरु चरणाश्रित जनों के भवसमुद्र तरण हेतु नौका स्वरूप श्री पादुकाओं का मंगल हो।

मंगलं ज्ञान रूपाभ्यां, वैराग्यस्य तथैव च।
साक्षात् प्रेम स्वरूपाभ्यां, पपादुकाभ्यां सुमंगलम् ।।4।।

ज्ञान वैराग्य तथा प्रेम की साक्षात श्री गुरुपद पादुकाओं का मंगल हो।

मंगलाज्ञानध्वान्तान्ध, जातानां चक्षुषां नृणाम्।
चन्द्राऽर्क ज्ञान ज्योतिभ्यां, पादुकाभ्यां सुमंगलम् ।।5।।

अज्ञान रूप अन्धकार से अन्धे हुए नेत्रों वाले जनो के लिए चन्द्रमा और सूर्य सदृश ज्योतिष्मन्त श्री पादुकाओं का मंगल हो।

मंगलं साधकानां च, सर्वेषां सिद्धिमिच्छताम्।
साध्य-साधन रूपाभ्याँ, पादुकाभ्याँ सुमंगलम्।।6।।

(जागतिक अथवा रस की) सिद्धि के इच्छुक साधकों के हेत साधन और साध्य स्वरुप श्री पादुकाओं का मंगल हो।

मंगल स्वेष्ठ रूपे वै, भावितानां सुभावना:।
पारिपक्वं प्रदातृभ्याँ, पादुकाभ्याँ सुमंगलम्।।7।।

अपने इष्ट के रुप में सुन्दर भावनाओं से भावित साधक को भावना की परिपक्वता प्रदान करने वाली श्री गुरु पादुकाओं का मंगल हो।

मंगलं सर्व शिष्यानां, सर्वस्वं जीवनं धनम्।
आत्मा सौख्यं च इष्टं च, पादुकाभ्याँ सुमंगलम्।।8।।

सभी शिष्यजनों की जीवन धन, आत्मा सुख, इष्ट और सर्वस्य स्वरुप श्री गुरु पद पादुकाओं का मंगल हो।

श्री मद् गुरो: शुभद पंकज पादयोर्वै,
आनन्द-प्रेम परिपूर्ण पादुकानाम्।
'गोविन्ददास' रचित मृदुमंगलं हि,
गीतं जनस्य वितनोति हि भाव सिद्धिम्।।

(अनन्त श्री विभूषित) श्री गुरुदेव जी के शुभ प्रद श्री चरण कमलों की पादुकाओं का "श्री हरिगोविन्ददास" द्वारा विरचित मंगलानुशासन भाव से गायन (पाठ) करने से भाव की सिद्धि प्रदान करने वाला है।

श्री लक्ष्मी निधि जी की आरती

कुँवर वर की आरती मनहारी।

श्री लक्ष्मीनिधि कुँअर सलोने, गौर गात द्युति दमकत सोने,

भये न है कबहूँ नहि होने, ऐसे प्रेम पुजारी।...........कुँवर।।1।।

जन्मत ते तिलकांलित भाला, रामायुध भुज सोह विशाला,

परम भागवत रघुवर श्याला, मिथिला राज विहारी।.....कुँवर।।2।।

राम प्रेम अह्लाद स्वरुपा, योग ज्ञान वैराग्य सुभूपा,

चन्द्रकीर्ति सुखधाम अनूपा, निमि कुल मंडन कारी।........कुँवर।।3।।

आदिशक्ति अग्रज सुखकारी, दुलरावत नित जनक दुलारी,

होत सदा तिन पर बलिहारी, सरसावत रस धारी।।..........कुँवर।।4।।

रसाचार्याष्टक

कर्पूर गौरं वदनं कमनीय कान्तिं,
दिव्याम्बरं सुखमयं कमलायताक्षम्।
मिथिलेन्द्र कीर्तिध्वज धारक दण्डरुपं,
श्री लक्ष्मीनिधिं रस गुरुं शिरसा नमामि।।1।।
माङ्गल्यमय विमल मैथिल सख्य भावे,
आचार्य पीठ अधिराजमनन्त सत्वम्।
श्री श्रीयुतं गुणमयं सुप्रकाश पुञ्जं,
श्री लक्ष्मीनिधिं रसगुरुं शिरसा नमामि।।2।।
श्री राघवेन्द्र शुचि श्यालक वृन्दमादिं,
सीताग्रजं सुशरदेन्दु मुखं प्रसन्नम्।
युवराज राज मतिधीर मनन्त सत्वं,
श्री लक्ष्मीनिधिं रस गुरुं शिरसा नमामि।।3।।

श्री याज्ञवल्क्य ऋषि मंडल पुङ्गवस्य,
प्राणाधिकं परम तत्वविदं सुशिष्यम्।
योगीश्वरं विमल ज्ञानमयं विरक्तं,
श्री लक्ष्मीनिधिं रसगुरुं शिरसा नमामि।।4।।
प्रेमाम्बुराशिमति तीव्र तरंगतत्वं,
वेत्तारमक्षयमनन्त छबिं प्रसन्नम्।
कस्तूरिका तिलक भूषित भव्य भालं,
श्री लक्ष्मीनिधिं रसगुरुं शिरसा नमामि।।5।।
सार्द्ध हरिं धृतमनन्त विचित्र वेशं,
स्कन्धे कृतं करवरं पुलकांग पूर्णम्।
लीला कला रसविदं कनकावदाभं,
श्री लक्ष्मीनिधिं रसगुरुं शिरसा नमामि।।6।।
श्री जानकी प्रणय पावन मत्त चित्तं,
आनन्ददं रसमयं वात्सल्य मूर्तिम्।
अनुजादि वृन्द नक्षत्र सुपूर्ण चन्द्रं,
श्री लक्ष्मीनिधिं रसगुरुं शिरसा नमामि।।7।।
ध्यानस्थितं नृपवरात्मज मत्त रागं,
प्रेमाश्रुधार परिपूरितमङ्ग यष्टिम्।
प्रायोः विरह वेदन तप्त चित्तं,
श्री लक्ष्मीनिधिं रसगुरुं शिरसा नमामि।।8।।
दिव्याष्टकं रसमयं मिथिलेन्द्र शूनोः,
रचितं किशोर कविना रसदं सुरम्यं।।
ये नित्य नित्य मतिशान्त मना पठन्ति,
ते प्राप्नुवन्ति रसरूप सुसख्य सिद्धिम्।।

श्री युगल सरकार की मधुर आरतियाँ

(1)

सिय-सियवल्लभ लाल की सखि आरति करिये।
दम्पति छबि अवलोकि के हिय नयनन धरिये।।
अंग अनूप सुहावने पट भूषण राजे।
नेह भरे दोउ रसिक सुभग सिंहासन राजे।।सिया।।
मन्द मन्द मुसकाय के सिय गल भुज डारे।
ललकि लई उर लाय प्राण प्रीतम निज प्यारे।।सिया।।
ललनागण बड़ भागिनी लोचन फल पावैं।
सेवहिं भाव बढ़ाय के मुद मंगल गावैं।।सिया।।
चँवर छत्र कोउ लिये बाजने विविध बजावैं।
प्रेमलता उर उमगि सुमन नचि नचि बरसावै।।सिया।।

(2)

सुन्दर वदन विलोकि के नयनन फल लीजै।
जानकि वल्लभ लाल की सखि आरती कीजै।।
कुण्डल कलित कपोल पै छुटि अलक विराजै।
कण्ठा कण्ठ सुहावनों गज मुक्ता राजै।।
पाग बनी जड़ि तार की दुपटा जड़ि तारी।
पटुका है पचरंग की मणि जड़ित किनारी।
'रसिक अली' की स्वामिनी अद्भुत छबि भारी।।

(3)

युगल वर की आरति करु नीकी।

गौर वरण श्री जनक लली जू की, श्याम वरण सिय पी की।।यु0

क्रीट चन्द्रिका में द्युति राजे, कोटिन सूर्य शशी की।। यु0

सुन्दर अंग-अंग में छबि है, कोटिन काम रती की । यु0

भाल विशाल तिलक की शोभा, अधरन मंद हँसी की । यु0

युगल रुप की अनुपम शोभा, उपमा हो गयी फीकी ।।यु0

रामेश्वर लखि ललित युगल छबि, हिय हुलसत सब ही की।यु0

(4)

सीतावर सुखकर रस धर की, लागै भलि आरति दुलह वर की।

शुचि श्यामल सुगात, जामा पीत भल भात,

मारा सुभग सम सूर्य के सोहात,

शिर सेहरा लहरन लर की। लागै भलि आरति दुलह वर की।

मुसकत मंद मंद अमिय अनूप,

जनु जन जिय सीचैं बनि रस रुप,

चितवनि करति कहर कर की, लागै भलि आरति दुलहवर की।

नभ सुरवृन्द वरषैं झरि झरि फूल,

दुंदुभी बजाय कहि जय सुख मूल,

लखि लखि हर्षण हिय हर की, लागै भलि आरति दुलह वर की।

(5)

गाओ गाओ री प्रिया प्रीतम की आरती गाओ।

आस पास सखियाँ सुख दयनी,

सजि नव साज श्रृंगार सुनयनी,

वीण सितार लिये पिक बयनी,

गाय सुराग सुनाओ, प्रिया प्रीतम की आरती गाओ।

अनुपम छबि धर दम्पति राजैं,

नील पीत पट भूषण साजैं,

निरखत अगणित रति शशि लाजैं,

नैनन को फल पाओ. प्रिया प्रीतम की आरती गाओ।

नीरज नयन चपल चितवन में,

रुचिर अरुणिमा शुचि अधरन में,

चन्द्रवदन की मृदु मुसुकनि में,

कारी घुंघरारी जुलुफन में,

अपनो मन अरुझाओ, प्रिया प्रीतम की आरती गाओ।

कंचन थार संभारि मनोहर,

घृत कपूर शुभ बाति ज्योतिकर,

मोरछल चँवर लिये रामेश्वर,

हरषि सुमन बरसाओ, प्रिया प्रीतम की आरती गाओ।

(6)

नख शिख छबिधर की, आरती करिये सियवर की।

तिलक चिलक भालन पै भ्राजै,

मुख निरखत शारद शशि लाजै,

नील प्रीत अम्बर शुभ छाजै,

कुमकुम केशर की, आरती करिये सियवर की।

कर्ण फूल कुण्डल झलकत हैं,

चन्द्रहार मोती लहरत हैं,

कर–कंकण की द्युति दमकत हैं,

जग मग दिनकर की, आरती करिये सियवर की।

मृदु तरव़न में अधिक लुनाई,

हास विलास न कुछ कहि जाई,

चितवन की छबि अति सुखदाई,

मन ही मनहर की, आरती करिये सियवर की।

सिंहासन पर चँवर ढुरत हैं,

झाँझ बजत जय जय उचरत हैं,

सादर स्तुति देव करत हैं,

अँजुरिन सुमन देव वरषत हैं।

लुटरनि अनुचर की, आरती करिये सियवर की।

जयति श्री जानकी वल्लभलाल, करूँ तव आरती होऊँ निहाल।
मधुर मूरति दोऊ श्यामल गौर,
सुछबि श्रृंगार मनहुँ इक ठौर,
नहीं रे इनकी उपमा कोउ और,
निरखि रति लजै, मदन मद तजै, अंग-अँग सजै,
सुभूषण वर मुक्ता मणि माल, करुँ तव आरती होऊँ निहाल।।
शीश पर क्रीट मुकुट झलकै,
कान में कर्ण फूल चमकै,
कपोलनि डुलै कुटिल अलकै,
नयन कजरारे, मोहनिया डारे, सरस रतनारे,
सुचन्दन कुमकुम केशर भाल, करूँ तव आरती होऊँ निहाल।।
परस्पर दोउ चकोर दोउ चन्द,
प्रिया प्रिय अनुपम सुषमाकन्द
निरखि प्रेमिन हिय परमानन्द,
मंद मृदु हँसन, रुचिर द्युति दसन, मनोहर वसन,
दोऊ सोहे गलबहियाँ डाल, करूँ तव आरती होऊँ निहाल।।
बजत वीणा सितार मिरदंग,
सबै मिलि गावत सहित उमंग,
होत पुलकायमान अँग-अंग,
रंग जब चढ़त, प्रेम हिय बढ़त, नयन जल झरत,
मधुर स्वर गावत दै दै ताल, करूँ तव आरती होऊँ निहाल।।
स्वामिनि स्वामी करुणागार,
प्रणत जन रामेश्वर आधार,
जोरि कर विनवौं बारम्बार,
नहीं रे कछु बनत , नेम जप वरत, रहूँ पर निरत,
यही बर मागौं परम कृपाल, करूँ तव आरती होऊँ निहाल।।

(8)

आरती रसिक रंगीले की, सीय रंग श्याम छबीले की।।

चन्द्रिका क्रीट शीश प्यारी,

लहरती कुंचित लट कारी,

नवल नासा मणि मनहारी,

परम रस रुप, सुसुषमा भूप, रुंप रस रसिक मदीले की।।आ0।।

कण्ठ उर भूषण मुक्ता माल,

ललित–लम्बित वनमाल विशाल,

दमकती दन्तावलि छबि जाल,

लाल शरमीले, धर पट पीले, कटीले दृग कजरीले की।।आ0।।

युगल कर पुंज कमल सोहे,

लजीले मंद कुसुकि मोहै,

परस्पर छबि श्रृंगार जोहैं,

सुधा के प्रान, अनोखी शान, रुप भूपति गर्वीले की।।आ0।।

साटिका नील लाड़िली गात,

लाल, पीलाम्बर धर हरषात,

अंग प्रत्यंग अनंग लजात,

नील जलजात, पीत संग प्रात, झरै रसराज रसीले की।।आ0।।

रहें रस भरे लाड़िली लाल,

निरखि नयना हो रहे निहाल,

आह यह भृकुटि गुलाबी गाल,

महा छबिधाम, "किशोर" ललाम, प्राण के प्राण सजीले की।।आ0।।

प्रिय पाहुना की आरती

(9)

प्रिय पाहुना की आरती उतारु ऐ सखी,

मन मोहना की आरती उतारु ऐ सखी।।

चित चोरना की आरती उतारु ऐ सखी,

साँवर दुलहा की आरती उतारु ऐ सखी।।

दुलहिन श्री मिथिलेश दुलारी, दुलहा दुलेरुआ श्री अवध बिहारी।।

भरि भरि नयना निहारु ऐ सखी। प्रिय पाहुना.......।।

व्याह विभूषण अंग अंग साजे, मणि मण्डप मंगलमय राजै।

तन मन धन न्यौछावर ऐ सखी।। प्रिय पाहुना.......।।

रस बरसत रसिकन सुखकारी, मुसुकनि मन्द मधुर मनहारी।।छिन

पलहूँ न बिसारू ऐ सखी।। प्रिय पाहुना.......।।

सेहरा और नयन कजरारे, 'प्रेमनिधि' प्रेमिन के प्यारे।

निशि दिन हिय बिच धारु ऐ सखी। प्रिय पाहुना.......।।

श्री किशोरी जू की जन्म की आरती

(10)

आरती जनक लली जू की कीजै।

स्वर्ण थार धारि घृत बाती, तन निज वारि रुप रस पीजै।।

गौर वरण सुन्दर तन शोभा, नख शिख छबि नैनन भरि लीजै।।

''सरस माधुरी'' स्वामिनी मोरी, चरण कमल में चित नित दीजै।।

झूलन की आरती

(11)

आरति युगल किशोर की, सखियन के चित चोर की।

झूलन कुंज पिया अरु प्यारी, छवि श्रृंगार अनूप अपारी।

झूलत हरित हिंडोर की।। आरति युगल किशोर की।।

गरजि तरजि घन दमिनी सोहै, रिमझिम रिमझिम बरषि विमौहैं,

नाचनि मोरी मोर की।। आरति युगल किशोर की।।

पपिहा पिउ पिउ शोर मचावै, कोयल कुहू कुहू कहि गावै,

बोलनि दादुर जोर की।। आरति युगल किशोर की।।

नदी नार सबहीं उतराई, तरल तरंग दृगन सुखदाई,

सरयू सरित हिलोर की।। आरति युगल किशोर की।।

चहुँ दिशि छबि छाई हरियाई, कुसुमित वन की कहे कोगाई।

पवन बहत झकझोर की ।। आरति युगल क़िशोर की।।

छत्र चमर लै सखिगण सेवहिं, नाच गाय प्रभु को सुख देवहिं,

नूपुर के नव शोर की।। आरति युगल किशोर की।।

हर्षण वीणा वेणु बजावहिं, सबके हृदय हर्ष उपजावहिं,

सुख सुषमा रस बोर की।। आरति युगल किशोर की।।

(12)

आरती झूलन की कीजै, मधुर छबि नयनन लखि लीजै।।
लली लालन राजैं भरि प्यार,
सु नख सिख सजे सुभग श्रृंगार,
मदन मद तजै, सूर शशि लजै, डोल छबि छजै,
बलैयाँ बार--बार लीजै।। मधुर छबि नयनन लखि लीजै।।
नींद वश कबहुँ कबहुँ झुकि जात,
सखिन तन हेरि सकुचि मुसुकात,
विहँसि जब जोहैं, नयन मन मोहैं, धरैं धीर को है,
सखिन हिय प्रेम वारि भीजै।। मधुर छबि नयनन लखि लीजै।।
झूलन की झाँकी तजी न जाय,
नयनमाँ अधिक अधिक ललचाय
प्रेम रस रसै, युगल जो लसै उर अन्तर बसै,
तबहिं 'रसकान्तिलता' जीजै। मधुर छबि नयनन लखि लीजैं।।

श्री रंग विहारी विहारिणी जू की आरती

(13)

आरती रंग रंगीले की सुशोभित सिय सुख शीले के।
भावती भावन भल जोरी, सोहती सुठि श्यामल गोरी,
मोहती मारहु मद मोरी, पहिरि पट पियर, ज्योति जग जगर,
करत कल कहर, ललित ललि लाल रसीले की।। सुशोभित...
हाँथ में कंचन पिचकारी, छूटती रंग रसन धारी,
मारते मार अबिर भारी, कसे कल कमर, करत शुचि समर,
बना बनि विहर, छहर छबि तन मन गीले की।। सुशोभित ...
व्योम ते पुष्पन झरि लागी, देवता दर्शन अनुरागी।
लोक त्रय भाग भली जागी, सरसि सुख सुघर, पहुमि वर बगर,
ललकि लय लहर, हरषि हर्षण हर्षीले की।। सुशोभित ...

रथयात्रा की आरती

(14)

सिय साजना की आरती उतारु हे सखी।।
राजे रसमय रस रसिकेश्वर, हरत हृदय हँसि हँसि हृदयेश्वर।
माधुरी मधुर निहारु हे सखी, सिय साजना की आरी उतारु हे सखी।।
सिया सहित सोहत स्वर्णासन, आभा भहर भहर भल भासन।
नयन निरखि हिय धारु हे सखी, सिय साजना की आरती उतारु हे सखी।।
मन्द स्मित मुख अमिय सुहावन, ललित ललाम लुनाइ लुभावन।
रथारूढ़ रस सारु हे सखी, सिय साजना की आरती उतारु हे सखी।।
कुञ्चित कल अलकावलि कारी, नख शिख शोभा अकथ अपारी।
सम नहीं त्रिजग मझारु हे सखी, सिय साजना की आरती उतारु हे सखी।।
नेह नहाई अलिगण सोहति, सेवा साज लिए मन मोहति।
तन मन धन न्योछारु हे सखी, सिय साजना की आरती उतारु हे सखी।।
जानकी जीवन जनक जमाई, लक्ष्मीनिधि श्री सिधि सुखदाई।
मैथिल जन को अधारु हे सखी, सिय साजना की आरती उतारु हे सखी।।
नृत्य गान करि वाद्य बजाई, मंगल कहि पुष्पहिं वरषाई।
दास श्याम जयकारु हे सखी, सिय साजना की आरती उतारु हे सखी।।

(15)

आरति श्री अंजनि नन्दन की।

राम प्रेम रस रसिक शिरोमणि, गुणागार सब जग वन्दन की।।आ0।।

जन मन रंजन भव भय भंजन, हरण सकल जन दुख द्वन्दन की।।आ0।।

करुणा निधि सुख सिद्धि सुप्रेम निधि, काव्य कला निधि रस छंदन की।।आ0।।

बाधा हरण काम परिपूरण, शरण सुखद गति प्रद स्यन्दन की।।आ0।।

गोविन्द दास प्रणत माँगत प्रभु, परम प्रीति सिय रघुनन्दन की।।आ0।।

श्री हनुमन्मंगलाष्टकम्

(16)

मंगलं रामभक्ताय, अप्रमेय बलाब्धये।
राम प्रेम स्वरुपाय, आञ्जनेयाय मंगलम्।।1।।
मंगलं वायु-पुत्राय, केशरीनन्दनाय च।
ज्ञानिनामाग्रगण्याय, शिवरुपाय मंगलम्।।2।।
मंगलं भूमिनन्दिन्या, शोक-सन्ताप हारिणे।
लक्ष्मण-प्राण प्रदात्रे च, कृपा रुपाय मंगलम्।।3।।
मंगलं राघवेन्द्रस्य, कार्य-साधनपराय च।
सिन्धोल्लंघन शीलाय, महावीराय मंगलम्।।4।।
मंगलं वानरेन्द्राय, सुग्रीवेप्सित कारिणे।
जितेन्द्रियाय भव्याय, मनोवेगाय मंगलम्।।5।।
मंगलं राक्षसेन्द्रस्य, महादर्पाप-हारिणे।
विक्रमाद्भुत शीलाय, कामरुपाय मंगलम्।।6।।
मंगलं राम लीलायाः रसास्वादन कारिणे।
रुप-चन्द्र-चकोराय, नाम प्रेम्णे सुमंगलम्।।7।।
मंगलं भक्तवांछाया, कल्प-पादप रुपिणे।
स्मरतां दुःखनाशार्थ, तत्पराय सुमंगलम्।।8।।
श्री आंजनेय शुभ मंगल शासनाख्यं,
"गोविन्ददास" रचिताष्टक भावपूर्णम्।
श्री राम-भाव-रस सिद्धिकरं यशस्यं,
पाठेन नित्य कलि कल्मष नाशकं स्यात्।।

श्री राममंगलानुशासनम्

मङ्गलं कौशलेन्द्राय महनीय गुणाब्धये।
चक्रवर्ति तनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम्।।1।।
वेद वेदान्त वेद्याय मेघ श्यामल मूर्तये।
पुंसां मोहन रूपाय पुण्यश्लोकाय मङ्गलम्।।2।।
विश्वामित्रान्तरङ्गाय मिथिलानगरीपतेः।
भाग्यानां परिपाकाय भव्यरूपाय मङ्गलम्।।3।।
पितृभक्ताय सततं भ्रातृभिः सह सीतया।
नन्दिताखिललोकाय रामभद्राय मङ्गलम्।।4।।
त्यक्त साकेत वासाय चित्रकूट विहारिणे।
सेव्याय सर्वयमिनां धीरोदयाय मङ्गलम्।।5।।
सौमित्रिणां च जानक्यां चापबाणासिधारिणे।
संसेव्याय सदा भक्त्या स्वामिने मम मङ्गलम्।।6।।
दण्डकारण्यवासाय खरदूषण शत्रवे।
गृद्धराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तु मङ्गलम्।।7।।
सादरं शबरी दत्तं फलमूलाभिलाषिणे।
सौलभ्यपरिपूर्णाय सकतोद्रिक्ताय मङ्गलम्।।8।।
हनुमत्समवेताय हरीशाभीष्टदायिने।
बालिप्रमथनायास्तु महाधीराय मङ्गलम्।।9।।
श्रीमते रघुवीराय सेतूल्लङ्घितसिन्धवे।
जितराक्षसराजाय रणधीराय मङ्गलम्।।10।।
विभीषणकृते प्रीत्या लंकाभीष्टप्रदायिने।
सर्वलोकशरण्याय श्री राघवाय मङ्गलम्।।11।।
आसाद्य नगरीं दिव्यामभिषिक्ताय सीतया।
राजाधिराज राजाय महाराजाय मङ्गलम्।।12।।
ब्रह्मादिदेव सेव्याय ब्रह्मण्याय महात्मने।
जानकी प्राणनाथाय रघुनाथाय मङ्गलम्।।13।।

भावार्थ

प्रशंनीय गुणों के सागर कौशलेन्द्र श्री रामचन्द्र का मङ्गल हो, चक्रवर्ती राजा दशरथ के पुत्र मण्डलेश्वर श्री रामचन्द्र जी का मङ्गल हो।।1।।

जो वेद–वेदान्तों के ज्ञेय हैं, मेघ के समान श्याममूर्ति वाले हैं और पुरुषों में जिनका स्वरुप अत्यन्त मनोहर है, उन पुण्य श्लोक (पवित्र यश वाले) श्री रामचन्द्रजी का मङ्गल हो।।2।।

जो विश्वामित्र ऋषि के प्रिय और राजा जनक के भाग्यों के फल स्वरुप हैं उन भव्य रुप वाले श्री रामचन्द्र जी का मङ्गल हो।।3।।

जो सदा पिता की भक्ति करने वाले हैं, जो अपने [illegible] और सीताजी के साथ सुशोभित होते हैं और जिन्हों[illegible] [illegible] लोक को आनन्दित किया है उन श्री रामचन्द्र [illegible] मंगल हो।।4।।

जिन्होंने अयोध्या निवा[illegible] [illegible]कर चित्रकूट पर विहार किया जो और [illegible] [illegible]तियों क सेव्य हैं उन धीरोदय श्री रामचन्द्र का मगल हो।।5।।

लक्ष्मण तथा जानकी जी सदा भक्तिपूर्वक जिनकी सेवा करते हैं, जो धनुष बाण और तलवार को धारण किये हुए हैं, उन मेरे स्वामी श्री रामचन्द्र का मंगल हो।।6।।

जिन्होंने दण्डकवन में निवास किया है, जो खरदूषण के शत्रु

हैं और अपने भक्तराज गृधराज को मुक्ति करने वाले हैं उन श्री रामचन्द्र का मंगल हो।।7।।

जो आदर सहित शबरी के भी दिये हुये फल--फूल के अभिलाषी हुए, जो सुलभता से पूर्ण (अर्थात थोड़े ही परिश्रम से प्राप्य) हैं और जिनमें सत्वगुण का आधिक्य है उन श्रीरामचन्द्र मङ्गल हो।।8।।

जो हनुमान जी से युक्त हैं, हरीश (कपीश) को अभीष्ट देने वाले और बलि को मारने वाले हैं उन महाधीर श्री रामचन्द्र का मंगल हो।।9।।

जो सेतु बाँकर समुद्र को लाँघ गये और जिन्होंने राक्षस राज रावण पर विजय पायी उन रणधीर श्रीराम रघुवीर का मंगल हो।।10।।

जिन्होंने प्रसन्नता से विभीषण को उनका अभीष्ट लङ्का राज्य दे दिया और जो सब लोकों को शरण में रखने वाले हैं उन श्री राघव रामचन्द्र का मङ्गल हो।।11।।

वन से दिव्य नगरी अयोध्या में आने पर जिनका सीताजी के सहित राज्याभिषेक हुआ, उन महाराजाओं के राजा श्री रामचन्द्र का मंगल हो।।12।।

जो ब्रह्मा आदि देवताओं के सेव्य हैं, ब्रह्मण्य (ब्राह्मणों और वेदों की रक्षा करने वाले) हैं, श्री जानकी जी के प्राणनाथ हैं उन रघुकुल के नाथ श्री रामचन्द्र का मंगल हो।।13।।

सिद्धि सदन विहारी विहारिणी जू की प्रातः स्तुति

मङ्गल रसिकेन्द्राय रमणीय रसाब्धये।

कौशलेन्द्र कुमाराय, सार्वभौमाय मङ्गलम्।।1।।

वेद वेदान्त साराय, परब्रह्म परमात्मने।

नृणां मोहन रूपाय, रूपौदार्याय मङ्गलम्।।2।।

चराचराणां चित्तानां, दृष्टि मात्रापहरिणे।

नैत्रानन्द प्रदात्रेच, मन्दस्मेराय मङ्गलम्।।3।।

मण्डपे मिथिलेन्द्रस्य, सान्द्रानन्दस्य मूर्तये।

सीतया सह श्यामाय, वर वेषाय मङ्गलम्।।4।।

मेघ विद्युत समाभाय, परव्योम प्रकाशिने।

स्यान्दकाय सुधा श्रोतम्,भव्य भोगाय मङ्गलम्।।5।।

विष्णु शम्भवादि सेव्याय, निर्वचनीय कृपाब्धये।

पूर्ण प्रेम प्रपूराय, सर्वांगाय मंगलम्।।6।।

सर्व भूत शरण्याय, लक्षितार्याय लक्षणैः।

साधुवाद निकषणाय,यश से पुण्य मङ्गलम्।।7।।

मैथिलानां च सर्वस्याय,मंजु मानस चारिणे।

मंगलम् राज हंसाय,ज्ञान गम्याय मङ्गलम्।।8।।

श्री राघवेन्द्र शुभ मंगल शासनाख्याम्।

ये (श्री) रामहर्षण विनिर्मिताष्टक वै।

प्रीत्यां पठन्तु नितराम हृदि भाव मानाः।

ते ह्याऽषु राघव पदं ध्रुवमाप्नुवन्त।।9।।

श्री जानकी मंगलानुशासनम्

मंगलं भूमि नन्दियै, स्यन्दिन्यै रस श्रोतसाम्।

महाभाव स्वरुपायै, श्री जानक्यै च मंगलम्।।1।।

मंगलं छबि धामायै, विनिदिन्यै श्रियः श्रियम्।

नित्य कैशौर्यरुपायै सुनेत्रायै च मङ्गलम्।।2।।

मंगलं दामिनी दीप्त्यै भूषितायै सु भूषणैः।

पूर्णेन्द्वाभ वदनायै, भूमिजायै च मंगलम्।।3।।

मंगलं प्रेम रुपायै, दायिन्यै प्रेम पावनम्।

प्रियायै रसिकेन्द्रस्य, श्री सीतायै च मङ्गलम्।।4।।

मंगलं मृदुहास्यायै नन्दिन्यै, मिथिला भुवः।

साक्षात् कृपा स्वरुपायै, आद्याशक्तै च मङ्गलम्।।5।।

मंगलं भाव ग्राहिण्यै, भक्तानां रसिकात्मनाम्।

प्रमोद कानने नित्यं, विहारिण्यै च मंगलम्।।6।।

मंगलं वन्दितायै च, पाद पद्मौ रमादिभिः।

आवृतायै सखि वृन्दैः, वैदेह्यै च मङ्गलम्।।7।।

मंगलं राघवेन्द्रस्य, विहारिण्यै उरस्थले।

मण्डनायै महारास, रासेश्वर्यै च मङ्गलम्।।8।।

श्री मैथिली सरस मंगल भाव प्रोतम्,

गोविन्ददास रचितं मृदु मंगल वै।

प्रीत्यां पठन्तु सुमनाञ्जलि बद्धहस्ताः,

ते वै कृपा सुलभ भाव रस माप्नुवन्तु।।9।।

श्लोक

जय जय रघुराज प्राणि पुण्यावतार,
मधुर मधुर मूर्तचन्द्रकीर्ते रसेन्द्र।
अभिनव नव भावैर्मादृशान दास भृत्यान्,
भर–नर–वर भूप पादमूलोपसन्नान्।।

श्री रामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य, राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि।।
यस्यामलं नृपसदस्सु यशोऽधुनापि, गायन्त्यऽघघ्न मृष्यो दिगिभेन्द्रपट्टम्।
त नाकपाल वसुपाल किरीट जुष्टम्, पादाम्बुजं रघुपतिं शरणं प्रपद्ये।।
वन्दे विदेह तनया पद पुण्डरीक, केशोर सौरभ समा हृत योगि चित्तम्।
हन्तुं त्रिताप मनिषं मुनिहंस सेव्यं, सन्मानसालि परिपीत पराग पुञ्जम्।।
पारे गिरां गुणनिधे! श्रुतर्योवदन्ती, रुपं त्वदीयमपरं मनसोऽप्यगम्यम्।
साक्षात् कथं सरसिजाक्षि भवेदृते ते, वुद्धौ कृपा मनु कृशोदरि मादृशांतत्।।
याचेहमम्ब रघुनन्दन मूर्ति भाव्यं, सार्द्ध त्वयातिदृढ़मञ्जलिना विशेषम्।
त्वं देहि वेतृ वरदे मुनिसंघ मुख्या, मन्यन्ति वल्लभतरां स्वपतेर्भवन्तीम्।।
चार्वाङ्गिते चरणचारणवन्दिसङ्ग, मह्यं विदेह तनये परिदेहि नान्यम्।
याचे वरं वरविदां वरदे भवत्या, येनामुना तव धवे मन रञ्जना स्यात्।।

श्री सीतानाथ समारम्भां रामानन्दार्य मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरु परम्पराम्।।

श्री सिद्धि सदन बिहारी विहारिणी जू की नित्य स्तुति (सायं कालीन)

भजु जनक जामाता मनोहर, प्रेम प्रिय रस रुपिणं।
मिथिला विहारी श्याम सुन्दर,सुख स्वरुप अनूपिनं।
नख शिख सुभग वर वेष बनरा,व्याह वसन विभूषिणं।
अँग अंग आभा छहरि छहरति, सर्व भाँति अदूषिणं।
बहु कोटि मन्मथ मनहिं मोहत, नित्य निमिपुर वासिनं।
मधु मधुर मुसकनि चारु चितवनि, दृष्टि चित हृत हासिनं।
अति अनल्प सुख अमृत भौमा, दुःख दोष निवारिणं।
बसि हृदय हर्षण नशि अविद्या, चरण प्रेम प्रसारिणं।।

जय जय सुनैनानन्द वर्धनि, जनक जाया जानकी।
जय जय महल मिथिलेश क्रीड़ति जनक जननी प्राण की।
पितु मातु भाभी भ्रात अंकहि, सरसि क्रीड़ा कारिणी।
सुख समृद्धि पितु पुर प्रकाशति, प्रमुद प्रभु हिय धारणी।
रस रसिक रघुवर रुप रसिका, रास लीला कोविदा।
प्रिय प्राण दृगन चकोर चन्दा, सुधा सिन्धु प्रमोद दा।
तव पाद –कंज पराग पीवत, हंस योगी बनि मधुप।
सह शक्ति विधि हरि शंभु सेवित, अकथ महिमा अतिअनुप।
कृप स्वरुपिणि की कृपा लहि, सरस सेवा राम की।
पद कंज पाय पराग, सेवत सोह सरसत धाम की।
बिनु तव कृपा विधि हरि हरहु कहँ, दर्श दुर्लभ राम रस।
औरन कथा का कहि चलाई, सबहिं जगती जाल फँस।
सुशक्ति अनादि अचिन्त्य परमा, सबहिं सब सुख श्रेयदा।
भव थिति विलय जग कार्य कारिणि, राम रति अविरल प्रदा।
सिय राम हर्षण दास आशा, पूर्ण स्वामिनि कीजिये।
निज सहित प्रभु प्रिय प्रेम पूरण, सेव सुन्दरि दीजिये।

शरणाष्टक

(प्रेमारामायण से)

निरुपायस्य दीनस्य मायाधीनस्य सर्वथा।
मापमूर्तेरऽनाथस्य श्रीरामः शरणं मम।।1।।

संसार सिन्धु मगनस्य काम दासस्य दुर्मतेः।
ज्ञान नेत्र विहीनस्य श्री रामः शरणं मम।।2।।

अविद्या ग्रस्त चित्तस्य बहिर्वृत्तेश्च सर्वदा।
विषयानल दग्धस्य श्रीरामः शरणं मम।।3।।

दुष्टाति भावापन्नस्य श्रुति शास्त्र बहिर्मते।
साधु भाव विहीनस्य श्री रामः शरणं मम।।4।।

कुसङ्गोत्फुल्ल चित्तस्य साधु निन्दन कृन्मतेः।
कामिनी कान्ति लुब्धस्य श्री रामः शरणं मम।।5।।

ममाहं–बुद्धि–रुपस्य भवासक्तस्य पूर्णतः।
अज्ञान तिमिरान्धस्य श्री रामः शरणं मम।।6।।

प्रेमाति शून्य चित्तस्य लोकेषणा रतस्य च।
आत्म ज्ञान विहीनस्य श्री रामः शरणं मम्।।7।।

जगत्पादाहतस्यास्य दुःख पिण्डस्य सर्वतः।
नान्यथा गतिर्दासस्य श्रीरामः शरणं मम।।8।।

शरणाष्टक पाठेन ह्येतदर्थ स्वधारणात्।
स्वाचार्य सेवन रतः नाप्नुयाद्दैन्यमन्यथा।।9।।

इदं भरत संप्रोक्तं शरणाष्टक तारकम्।
यः पठेद्दैन्य भावेन मानवः राममाप्नुयात्।।10।।

श्री राम पनहियन की आरती

आरति श्री सिय राम पनहियन की, जग–जग ज्योति मुनिन मन मोहियन की।

मानत अपनी इष्ट अधारी,
जेहिं अभिषेकत अँसुअन धारी,
शरण शरण मुख गिरा उचारी,
जनक सुवन शिर सोहियन की। जग–जग ज्योति मुनिन मन मोहियन की।

स्वर्ण सिंहासन छत्र विराजे,
चँवर ढुरत सिद्धी सजि साजे,
नृत्य गीत वर वाद्य विभ्राजे,
रत्न जटित छबि छोहियन की। जग–जग ज्योति मुनिन मन मोहियन की।

प्रजा प्राण की प्रहरी मानो,
प्रेम रत्न की सम्पुट जानो,
युग विभूति जनु प्रकटि बखानो,
उभय आँख अभ्यन्तर जोहियन की। जग जग ज्योति मुनिन मन मोहियन की।।

जीव यत्न हित मन को भावत,
मनहु रकार मकार सुधावत,
कुल कपाट कर कर्म सुहावत,
राम लखन सम आनन्द दोहियन की। जग–जग ज्योति मुनिन मन मोहियन की।

सर्वस दान देति साकेता,
राम सिया को प्यार पुनीता,
अरु कैंकर्य स्वसुख को जीता,
हर्ष शरण प्रभु पाद पनहियन की। जग–जग ज्योति मुनिन मन मोहियन की।

श्री राम–पादुका–प्रार्थना

जय परम प्रभु पद पादुके प्रिय, प्रणत जन सुख दायिनी।
प्रभु प्रेम पूरण पियुष प्रद जो, परम आनन्द लायिनी।।
शुचि कर्म विरती योग ज्ञानहुँ, भक्ति भर चित चायिनी।
गति अन्य नहिं जेहिं के अहर्निशि, योग क्षेमहिं छायिनी।।
सिय राम उर करुणा कृपा कहँ, भक्त हित उपजायिनी।
अह मम अविद्या आस नाशिनी, दु:ख दोष दुरायिनी।।
हर्षण तुम्हारी आस केवल, शरण आयों ज्ञायिनी।
निज माथ मणि करिके तुम्हे चह, प्रीति प्रभु अनपायिनी।।

श्री राम पादुका मंगलानुशासनम्

मंगलं रस रुपाभ्यां छबि मय पाद–पद्मयो:।
वर वेषस्य रामस्य पादुकाभ्यां सुमंगलम्।।1।।
मंगलं प्रेम रत्नस्य सम्पुटं सुमनोहरम्।
परमानन्दपूर्णभ्यां, पादुकाभ्यां सुमंगलम्।।2।।
मंगलं वै रकारस्य मकारस्य तथैव च।
श्री नामस्य प्रतीकाभ्यां पादुकाभ्यां सुमंगलम्।।3।।
मंगलं रसिकानां च प्राणेभ्यो वल्लभं परम्।
साक्षात् श्रीरामरुपाभ्याँ पादुकाभ्यां सुमंगलम्।।4।।
श्री लक्ष्मीनिधि सिद्ध्योश्च जीवनं परमं धनम्।
अन्नं प्राणं सुखं धामं, पादुकाभ्यां सुमंगलम्।।5।।

मंगलं श्री भरतस्य, प्राण सञ्जीवनं सुखम्।
यामिकाभ्यां च प्राणस्य, पादुकाभ्यां सुमंगलम्।।6।।
मंगलं भव भीतेश्च, निहन्तृभ्यां समूलतः।
परमा प्रीति प्रदातृभ्यां, पादुकाभ्यां सुमंगलम्।।7।।
मंगलं मैथिलानां वै तथा अवध वासिनाम्।
जीवनं सर्व जीवानां, पादुकाभ्यां सुमंगलम्।।8।।
श्री पादुका विलसमान विवाह काले।
श्री राघवेन्द्र वर पंकज पादयोर्वै।।
गोविन्द दास रचितं अनुशासनं च।
प्रीत्याप्रगायन नराः सु रसं लभयन्ते।

श्री सरयू महरानी की आरती

(1)

जय जय तरल तरंगे सरजू।
जय वाशिष्टी प्रेम प्रवाहिनि, ब्रह्म द्रवे सुख करजू।।
सरितन की ठकुराइन जय जय, दरश करत दुख हरजू।।
करहुँ प्रणाम कहत रघुनन्दन, सिय सौमित्र सुदर जू।।
हर्षण बहुरि विलोकेउँ आई, करेहु कृपा यह अरजू।।

(2)

सरि सरयू की आरति भाई।

धूप दीप कर्पूर थाल धरि, अलियाँ करति सुहाई।।1।।

राजीं दिव्य सिंहासन सरयू, चहुँ दिशि अलि समुदाई।।2।।

छत्र चँवर विंजन ते सेवति, विमल सुयश भलि गाई।।3।।

गंग जमुन विरजादिक सरसुति, प्रगटति अंश लखाई।।4।।

सुर नर मुनि मज्जत निशिवासर, दर्श सियावर पाई।।5।।

ब्रह्म द्रवी शुचि प्रेम वारि भल, विहरत सिय रघुराई।।6।।

दास श्याम नेत्रजा चरण गहि, चाहत भक्ति अमाई।।7।।

(3)

उतारों प्रीति रस पगि पगि, मुदित मन आरती नीकी।

निहारो कैसी मनहर छबि, सुहाई देति सरयू की।।

द्रवित हो भक्त पर प्रभु ने, प्रेम मय अश्रु बरसाया।

हर्षि हिय सृष्टि कर्ता ने, सुमानस सर में ठहराया।।

सुधारो जग जनमि जीवन, कृपा रस धार हरि जू की।।

निहारो कैसी मनहर छबि, सुहाई देति सरयू की।।

अहो क्या विमल जल सोहे, गुणद अमृत से बढ़कर है।

निमज्जन मोद मन बाढ़े, चराचर सर्व सुखकर है।

पुकारो नित्य जय जय, भवार्णव पार कर जू की।।

निहारो कैसी मनहर छबि, सुहाई देति सरयू की।।

विराजित अंक में धारे, अनुज सह श्याम रघुवर जू।

सुसेवति भाव भरि भरि नित, लिये सब साज परिकर जू।

धरो हिय झाँकि 'वल्लभ' नित प्रदायिनी प्रेम पर जू की।।

निहारो कैसी मनहर छबि, सुहाई देति सरयू की।।

—: श्री सन्त भगवान की आरती :—

क्र0 64

आरति संत जनन की कीजै।

अपनो जनम सफल कर लीजै।

नारायण के नाना रुपा।

ता महँ सुन्दर सन्त स्वरुपा।

यह स्वरुप नयनन धरि लीजै।

आरति सन्त जनन की कीजै।

जब हरि कृपा जीव पर करते।

सन्त रुप धरि तब वे मिलते।

सन्त कृपा का अनुभव कीजै।

आरति सन्त जनन की कीजै।

वेद पुराण शास्त्र का मत है।

प्रथम भगति सन्तन संगति है।

इनका संग अवश्य कर लीजै।

अरति संत जनन की कीजै।

हर्षण कहहिं सुनहिं सब भाई।

सन्त जनन से करहिं मिताई।

इनकी सीख ह्दय धरि लीजै।

आरति सन्त जनन की कीजै।

—शिवराम दास पट्टी

उत्सवीय मंगलाचरण

रसमय श्री गुरुदेव के, चरण कमल चितलाय,
वन्दौ त्रिकरण हर्ष हिय, रहै रसहिं रस छाय।
रसिक संत रस रुप जे, भये अहैं अरु होय।
मनसा वाचा कर्मणा, प्रणवौ पद सुख मोय।।
करहु कृपा जन जन सुखद रस वर्षै चहुँ ओर।
भूले भव रस सबहिं विधि, मैं तैं रहै न मोर।।
राम रसिक हनुमान हरि, रामदास सिरताज।
प्रेम चरित प्रभु के सुनत, प्रेम पगे भलभ्राज।।
बन्दि पवनसुत पद कमल, चहौं प्रेम सियनाह।
करहु कृपा लीला ललित, लखि पुनि भरौं उछाह।।
लखन भरत रिपुसूदनहिं, पुनि पुनि करौं प्रणाम।
सहित उर्मिला माण्डवी, श्रुति कीरति सुखधाम।।
सीता पति पद पदुम में, रसे रहैं दिन रात।
प्रेम मूर्ति अनुपम अकथ, करहिं कपा सरसात।।
मिथिला अवध समाज सब, राम रँगी रस रूप।
बन्दउँ प्रेम प्रदायिनी कण कण भूमि अनूप।।
प्रणवहुँ परिकर परम प्रिय, निपुण सकल कैंकर्य।
राम सिया के प्राण सम, लहत न तिन बिन धैर्य।।
सखी सहचरी सीय की, चन्द्रकलादि प्रवीण।
बन्दउँ सबहिं सुप्रेम ते, करहु कृपा रसभीन।।

प्रणवौं राम सखान कहँ, राम रूप जिय जान।
राम रँगीले रस रमत, परम प्रेम हिय आन।।
मैथिल सखा अनूप जे,राम श्याल सिय भ्रात।
रसमय चाखत राम रस, सुख स्वरूप सरसात।।
बन्दउँ चरण सरोज तिन्ह, करहिं कृपा सुख सार।
सीताराम सुप्रीति उर बहै विमल रसधार।।
प्रणवौं श्री लक्ष्मीनिधिहिं, प्रीति रीति रस छाय।
मिथिलापुरी सखान के, सर्वस प्राण प्रमाय।।
रसाचार्य रस महँ रसे, रसमय रसद सुजान।
राम रसिक के श्याल सुचि, सिया भ्रात सुखखान।।
करहु कृपा बिनु हेतु प्रभु, देहिं रसहिं रस प्याइ।
आपन जन जिय जानि कै, करुण कृपा दरशाइ।।
जै जै सीताराम की, जय जय युगल किशोर।
जै जै भक्तन प्राणधन, जय रसिकन सिरमौर।।
दोनो एक एक प्राण प्रभु, दोनों चन्द चकोर।
दूनौ मधुप सरोज मधु, दोउ रसिया चित चोर।।
लली लाल लोने ललित, ललकि लखहु लवलाय।
हर्षण हिय हुलसावनी, झाँकी कहर मचाय।।

"श्री मन्त्रराज वन्दना"

जय मंत्रराज महेश वन्दित, पर प्रकाश स्वरुपिणं।
जय जय अनादि अनन्त राधित, महामंगल मूरिणं।।
जय शम्भु सेवित सतत शिवा समेत सादर वन्दितं।
मुख पद्म विहरणशील नित ब्रह्मादि देवमनन्दितं।।
जेहिं रेफ मात्र स्वरूप से उत्पन्न होत त्रिदेव हैं।
जेहिं रेफ मात्रहिं ते सकल उद्भूत देवी देव हैं।।
जो सूर्य शशि अरु अग्नि हूँ के परम कारण कार्य हैं।
योगीन्द्र वृन्द मुनीन्द्रजन के ध्येय हैं स्वीकार्य हैं।।
जो वेदमय वेदार्थमय वेदान्त–वेद्य अनन्त हैं।
जपतां वरेषु विशुद्ध बुद्ध वरेण्य वन्दित संत है।।
जेहिं मँह अनन्य सुशेष पद भोगत्व निहित अनन्य है।
दाता अनन्य सुशरण पद का धन्य हैं अति अन्य है।।
श्री नाथ से आरम्भ हनुमत ब्रह्म देवाराधितं।
श्री मन्मुनीन्द्र वशिष्ठ कुंभज प्रभृतिगण अहलादितं।।
श्री रामहर्षण देव कृत कलिकाल मध्य अनुष्ठितं।
स्थापितं आराधितं दृष्टं परम रस दायकं।।
एवं सुमहामहिन्म पावन मन्त्रराज नमामि ते।
आनन्दमय आलोकमय विज्ञानमयं वदामि ते।
भरि भाव दास किशोर कृत वर वन्दना जे गाइहैं।
आचार्य कृपा प्रसाद ते निश्चय परम पद पाइहैं।

सुमधर संकीर्तन ध्वनियाँ

1. सिया बोल सिया बोल सिया बोल, श्री राम राघव रसिकेश बोल
2. हम तो हमारी सिया जू के सिया जू हमारी हैं।
   हम तो हमारे राघव जू के राघव जू हमारे हैं।।
3. रस की अंगारी सियजू हमारी राम पियारी जनकलली
4. प्यारे श्री राम पियारी श्री सीते।
5. जय सीता रमण, जय सीता रमण।
   जय सीता रमण श्री राम, जय सीते सीते।।
6. राम राघवाय नमः, सीतावल्लभाय नमः,
   राजेन्द्र रसिकेश कौशलेश रघुनन्दन।
7. जय जय जय रस रुप किशोरी, जयति राम रसिकन शिरमौरी।
8. मेरे तो आधार है गुरुदेव के चरणाविन्द
9. सदा प्रपश्य मङ्गलम् श्री सद्गुरोर्मुखाम्बुजम्
10. राजेन्द्र जय जय रसिकेश जय जय, सीतारमण हरि योगीन्द्र जय जय।
11. आओ रघुनन्दना, प्यारे रघुनन्दना, मैथिलों के प्राण धन सीता उर चंदना।
12. सिया प्यारी की जय सुकुमारी की जय।
    मिथिलेश किशोरी की जय जय जय।।
13. श्री सीता श्री राम निमिकुल चन्दा, श्री रामहर्षण प्रभु आनन्दकन्दा
14. हे मिथिलेश लाड़िली सीते, कब करिहौ दृग सफल हमारे।
15. जय सीते जय, सीते सीते, जय सीते जय जनकसुते।
    जय राघव जय राघव राघव जय राघव जय प्राणपते।।

16. जय लक्ष्मीनिधि जय रघुवीर, सुन्दर श्यामल गौर शरीर

17. राम पाहिमाम् सीताराम पाहिमाम्, राम पाहिमाम् सीताराम पाहिमाम्

18. पालय माम् दीनम् सीते पालय माम् दीनम्।

पालय माम् दीनम् राघव पालय माम् दीनम्।।

19. जय जय जनक नन्दिनी सीते,

श्री लक्ष्मीनिधि की प्यारी अनुजे, जयति सुनैना प्रीते।। जय0।।

चन्द्रकले जय हेमे सुषमे, शीलाचारु विनीते ।। जय0।।

दास रामहर्षण सुखदायिनि, कृपा कटाक्षहुँ जी ते ।। जय0।।

20. जय गुरुदेव जय जय जगवन्दा।

जय वैष्णव नमः श्री रामानन्दा।।

रास संकीर्तन

खनन खनन करताल, छमाछम नूपुर झमकनि।
भेरी चंग मृदंग ढोल की मधुरी धमकनि।।
सिया बोल सिय बोल, बोल की मधु रव छाई।
उमगत प्रेम उमंग तरँग, अनुपम अधिकाई।।
अति उद्दाम सुनृत्य वर, वर्धन प्रेम हुलास की।
जयति जगत पावन करन, श्री संकीर्तन रास की।।

जय सीताराम राजेन्द्र रसिकेश प्यारे राघव

श्री आचार्य परम्परा

श्री रामः प्रथमाचार्यः पूर्णब्रह्म परात्परा:।

द्वितीयः श्री सीताच, शक्ति आह्लादिनी हरेः।।1।।

श्री हनुमान तृतीयस्तु, चतुर्थ कमलासनः।

पन्चमः श्री वशिष्ठश्च, षष्ठः पाराशरो गुरुः।।2।।

सप्तमः श्रीव्यासस्तु,अष्टमश्च शुकःस्मृतः।

नवमो पुरुषोत्तमाचार्यः, दशमो गंगाधर स्मृतः।।3।।

एकादशः सदानन्दः, रामेश्वरश्च द्वादशः।

त्रयोदशो द्वारानन्दः, देवानन्दः चतुर्दशः।।4।।

पंचदशः श्यामानन्दः, श्रुतानन्दस्तु षोडशः।

सप्तदशः चिदानन्दाः पूर्णानन्दश्चष्टादशः।।5।।

श्रियानन्द एकोनविन्शः, हर्यानन्दस्तु विन्शकः।

राघवानन्दैकविंशस्तु, द्वाविन्शोः जगद्गुरुः

श्रीमद्रामानन्दस्तु, वैष्णवधर्म प्रचारकः।।6।।

योगानन्दो त्रयोविन्शः, चतुर्विन्शो गया स्मृतः।

तुलसीदासः पंचविन्शे, नाथूरामस्तथैव च।।7।।

सप्तविन्शः चौगानी, ऊधवमैदानी ततः।

एकोनविन्शो खेमदासः, रामदासस्तु त्रिंशकः।।8।।

एकत्रिंशः लक्ष्मणदासः, द्वात्रिंशः देवदासकः।

भगवान च त्रयस्त्रिंशः, बालकृष्णो ततः स्मृतः।। 9।।

पंचत्रिन्शो वेणीदासः, श्रवणदास महात्मना।

श्रीमद्रामवचनस्तु, आचार्यः सप्तत्रिंशकः।। 10।।

अष्टात्रिंशः महाभागो आचार्य रामवल्लभः।

श्री अखिलेश्वर दासस्तु, आचार्यैकोनत्रिंशकः।। 11।।

वैष्णव वंशावतंसस्तु, आचार्यो श्री रामहर्षणः।

एकोनचत्वारिंशे हरिदासो महामना।। 12।।

श्री रामदर्शन सेवा संस्थान, नयाघाट, प. रुक्मा मार्ग अयोध्या उ.प्र.

प्रकाशन विभाग